॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

सातवाँ हिस्सा ।

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।
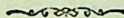
पन्नालाल राय द्वारा

लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।

चौथी बार ३०००] १९२२ [मूल्य ।-) आ०

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति।

सातवां हिस्सा।

पहिला बयान।

नागर थोड़ी दूर पश्चिम जाकर घूमी और उस सड़क पर चलने लगी जो रोहतासगढ़ की तरफ गई थी। पाठक स्वयम् समझ सकते हैं कि नागर का दिल कितना मजबूत और कठोर था। उन दिनों जो रास्ता काशी से रोहतासगढ़ के जाता था बहुत ही भयानक और खतरनाक था, कहीं कहीं तो बिल्कुल ही मैदान में जाना पड़ता था और कभी गहन बन में होकर दरिन्दे जानवरों की दिल दहलाने वाली आवाज सुनते हुए सफर करना पड़ता था, इसके अतिरिक्त उस रास्ते में लुटेरे, डाकुओं का डर तो हरदम बना ही रहता था। इन सब बातों पर जरा भी ध्यान न दे कर नागर ने अकेले ही सफर करना पसन्द किया, इसी से कहना पड़ता है कि वह बहुत ही दिलावर, निडर और सङ्गदिल औरत थी, शायद उसे अपनी ऐयारी का भरोसा या घमण्ड हो क्योंकि ऐयार लोग यमराज से भी नहीं डरते और जिस ऐयार का दिल इतना मजबूत न हो उसे ऐयार कहना भी न चाहिये॥

नागर एक मर्द नौजवान की सूरत बन कर तेज और मजबूत घोड़े पर सवार तेजी के साथ रोहतासगढ़ की तरफ जा रही थी उसकी कमर में ऐयारी का बटुआ, खञ्जर, कटार और एक पत्थर-कला * भी था। दोपहर होते होते उसने लगभग पच्चीस कोस के रास्ता तय किया और इसके बाद एक ऐसे गहन बन में पहुंची कि जिसके अन्दर सूर्य्य की रोशनी बहुत कम पहुंचती थी, केवल एक पगडण्डी सड़क थी जिस पर बहुत खुशहाल के सवारों को सफर करना पड़ता था क्योंकि उसके दोनों तरफ कटीले दरख़ और झाड़ियां थीं। इस जङ्गल के बाहर ही एक चौड़ी सड़क थी जिस पर गाड़ी और छकड़े वाले जाते थे मगर घुमाव और चक्कर पड़ने के कारण उस रास्ते को छोड़ कर घोड़सवार या पैदल लोग इसी जङ्गल में से हो कर जाया करते थे जिसमें से इस समय नागर जा रही है क्योंकि इधर से कई कोस का बचाव पड़ता था॥

यकायक नागर का घोड़ा भड़का और रुक कर अपने दोनों कान आगे की तरफ करके देखने लगा, नागर शहसवारी का फन बखूबी जानती थी और घोड़े के मिजाज को अच्छी तरह समझती थी, इस लिये घोड़े के भड़कने और रुकने से उसे किसी तरह का रञ्ज न हुआ बल्कि चौकन्नी होगई और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगी यकायक सामने की तरफ सड़क के बीचोबीच में बैठे हुए एक शेर पर उसकी निगाह पड़ी जिसका पिछला हिस्सा नागर की तरफ था अर्थात् मुंह उस तरफ था जिधर नागर जा रही थी। नागर बड़े

* पथरकला उस छोटे से बन्दूक को कहते हैं जिसके घोड़े में चकमक पत्थर लगा होता है और दंगक पर गिर कर आग पैदा करता है॥

गौर से शेर को देखने लगी और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये! अभी उसने कोई राय पक्की नहीं की थी कि दाहिनी बगल की झाड़ी में से एक आदमी निकल बड़ी फुर्ती के साथ घोड़े के पास आ पहुंचा जिसे देखते ही वह चौंक पड़ी और घबड़ाहट के मारे बोल उठी, "ओफ! मुझे बड़ा भारी धोखा दिया गया।" साथ ही इसके वह अपना हाथ पत्थरकलेपर ले गई मगर उस आदमी ने इसे कुछ भी न करने दिया, उसने नागर का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खैंचा और एक ऐसा झटका दिया कि घोड़े के नीचे आ रही। वह आदमी तुरत उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके दोनों हाथ कब्जे में कर लिये। यद्यपि नागर को विश्वास हो गया कि उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती तौ भी उसने बड़ी दिलेरी से अपने दुश्मन की तरफ देखा और कहा:—

नागर०। बेशक उस हरामजादी ने मुझे पूरा धोखा दिया, मगर भूतनाथ! तुम मुझे मार कर जरूर पछताओगे और वह कागज जिस के मिलने की उम्मीद में मुझे मार रहे हौ तुम्हारे हाथ कभी न लगेगा क्योंकि मैं उसे अपने साथ नहीं लाई हूं, यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरी तलाशी लेलो। बिना वह कागज पाये मेरे या मनोरमा के साथ बुराई करना तुम्हारे हक में ठीक नहीं है इसे तुम अच्छी तरह जानते हौ॥

भूत०। अब मैं तुझे किसी तरह छोड़ नहीं सकता, मुझे विश्वास है कि वे कागजात जिनके सबब से मैं तुझ ऐसी कमीनी की ताबेदारी करने पर मजबूर हो रहा हूं इस समय जरूर तेरे पास हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि कमलिनी ने अपना वादा पूरा किया और कागजों के सहित तुझे मेरे हाथ फँसाया, अब तू मुझे धोखा नहीं दे सकती, तलाशी लेने की नीयत से मैं तुझे छोड़ नहीं सकता, तेरा

जमीन से उठना मेरे लिये काल हो जायगा फिर तू हाथ नहीं आ सकती ॥

नागर०। (चौंक कर ताज्जुब से) हैं ! क्या वह कम्बख़्त कमलिनी थी जिसने मुझे धोखा दिया ? अफसोस ! शिकार घर में आ कर निकल गया ! खैर जो तेरे जी में आवे कर यदि मेरे मारने ही में तेरी भलाई हो तो मार मगर मेरी एक बात सुन ले ॥

भूतनाथ० । अच्छा कह क्या कहती हैं ? थोड़ी देर ठहर जाने में मेरा कोई हर्ज नहीं ॥

नागर०। इसमें तो कोई शक नहीं कि अपने कागजात जिसे तेरा जीवनचरित्र कहना चाहिये लेने के लिये मुझे मारता है ॥

भूतनाथ०। बेशक ऐसा ही है, यदि वह मुट्ठा मेरे हाथ का लिखा हुआ न होता तो मुझे उसकी परवाह न थी ॥

नागर०। हां ठीक है, परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मुझे मार कर तू वह कागजात न पावेगा, जब मैं इस दुनिया से जाती ही हूं तो क्या जरूर है कि तुझे भी बर्बाद करती जाऊं ? मैं तेरी लिखी किताब खुशी से तेरे हवाले करती हूं, मेरा दाहिना हाथ छोड़ मैं तुझे बता दूं कि मुझे मारने बाद वह कागजात तुझे कहां से मिलेंगे ॥

भूतनाथ इतना डरपोक और कमजोर भी न था कि नागर का केवल दाहिना हाथ जिसमें हरबे की किस्म से एक कांटा भी न था छोड़ने से डर जाय, दूसरे उसने यह भी सोचा कि जब यह स्वयम् कागजात देने को तैयार है तो क्यों न ले लिया जाय, कौन ठिकाना इसे मारने बाद कागजात हाथ न लगें। थोड़ी देर तक कुछ सोच विचार कर भूतनाथ ने नागर का दाहिना हाथ छोड़ दिया, उसने फ़ुरती से अपना हाथ भूतनाथ की गाल पर दबा कर फेरा। भूतनाथ को मालूम हुआ कि नागर ने एक सूई उसके गाल में चुभो दी,

मगर वास्तव में ऐसा न था। नागर की उँगली में एक अँगूठी थी जिस पर नगीने की जगह स्याह रङ्ग का कोई पत्थर जड़ा हुआ था वही भूतनाथ की गाल में गड़ा जिससे एक लकीर सी पड़ गई और जरा सा खून भी दिखाई देने लगा। मालूम होता है कि वह नोकीला स्याह पत्थर जो अँगूठी में जड़ा हुआ था किसी प्रकार का जहर हलाहल था जो खून के साथ मिलतेही अपना काम कर गया क्योंकि उसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी। वह एकदम चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और नागर उसके कब्जे से कर अलग होगई॥

नागर ने घोड़े की बागडोर जो चारजामे से बंधी हुई थी खोली और उसी से हाथ पैर बांधने बाद भूतनाथ को एक पेड़ के साथ कस दिया, इसके बाद उसने ऐयारी के बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था उसमें से थोड़ा सा तेल उसने भूतनाथ के गाल में उसी जगह जहां लकीर पड़ गई थी मला, देखते २ उस जगह एक बड़ा फफोला पड़ गया, नागर ने खञ्जर की नोक से उस फफोले में छेद कर दिया जिससे उसके अन्दर का बिल्कुल पानी निकल गया और भूतनाथ होश में आ गया॥

नागर०। क्यों बे कम्बख़्त! अपने किये की सजा पा चुका या कुछ कसर है? तूने देखा मेरे पास कैसी अद्भुत चीज है! अगर हाथी भी हो तो इस जहर को बर्दाश्त न कर सके और देखते २ मर जाय तेरी क्या हकीकत है॥

भूतनाथ०। बेशक ऐसा ही है, निश्चय हो गया कि मेरी किस्मत में जरा भी सुख भोगना बदा नहीं है॥

नागर०। साथ ही इसके तुझे यह भी मालूम होगया होगा कि उस जहर को मैं सहजही में उतार भी सकती हूं। इसमें कोई सन्देह

नहीं कि तू मर चुका था मगर मैंने तुझे इस लिये जिला दिया कि अपने लिखे हुए कागजात का हाल दुनिया में फैला हुआ तू स्वयम् देख ले और सुन ले क्योंकि उससे बढ़ कर कोई दुःख तेरे लिये नहीं है और यह भी देख ले कि उस कम्बख़्त कमलिनी के साथ मैंने क्या किया जिसने मुझे धोखे में डाला था, इस समय वह मेरे कब्जे में है क्योंकि कल वह मेरे घर में जरूर आ कर टिकेगी, अहा ! अब मुझे मालूम हुआ कि रात वाले अद्भुत मामले की जड़ वही है और मुरदे शेर को रास्ते में तू ही ने बैठाया है ॥

भूतनाथ० । (आंखों में आंसू भर कर) अबकी दफे मुझे माफ करो जो कुछ हुक्म दो मैं करने को तैयार हूं ॥

नागर० । मैं अभी कह चुकी हूं कि तुझे मारूंगी नहीं, फिर इतना क्यों डरता है ?

भूतनाथ० । नहीं नहीं, मैं वैसी जिन्दगी नहीं चाहता जैसी तुम देती हो, हां यदि इस बात का वादा करो कि वह कागजात किसी दूसरे को न दोगी तो मैं वे सब काम करने को तैयार हूं जिनसे पहिले इन्कार करता था ॥

नागर० । मैं ऐसा कर सकती हूं क्योंकि आखिर तुझे जिन्दा छोड़ूंहीगी, यदि मेरे काम से तू जी न चुरावेगा तो मैं तेरे कागजात बड़ी हिफाजत से रक्खूंगी । हां खूब याद आया ! उस चीठी को जरा पढ़ना चाहिये जो उस कम्बख़्त कमलिनी ने यह कह कर दिया था कि "मुलाकात होने पर मनोरमा को देना ॥"

यह सोचतेही नागर ने बटुए में से वह चीठी निकाली, लिफाफा फाड़ के फेंक दिया और भूतनाथ को सुना कर वह चीठी पढ़ने लगी॥

यह लिखा हुआ था :—

" जिस काम के लिये मैं आई थी ईश्वर की कृपा से वह काम

बखूबी होगया वह कागजात इसके पास हैं लेलेना। दुनिया में यह बात मशहूर है कि उस आदमी का जहान से उठ जाना ही अच्छा है जिससे भलों को कष्ट पहुंचे, मैं तुमसे मिलने के लिये यहां बैठी हूं॥"

नागर०। देखो नालायक ने चीठी भी लिखी तो ऐसे ढङ्ग से कि यदि मैं चोरी से खोल कर पढ़ूँ भी तो किसी तरह का शक न हो और इसका पता भी न लगे कि यह भूतनाथ के नाम लिखी है या मनोरमा के। स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग को भी बचा गई है, उसने यही सोच के चीठी मुझे दी कि जब यह भूतनाथ के कब्जे में आ जायगी और जब वह इसकी तलाशी लेगा तो यह चीठी उसके हाथ लग जायगी और जब पढ़ेगा तो नागर को अवश्य मार डालेगा और तुरत यहां आ कर मुझसे मिलेगा जिसमें किशोरी छुड़ा लूं। अच्छा हरामजादी देख मैं तेरे साथ क्या सलूक करती हूं॥

भूतनाथ०। अच्छा अब मैं वादा तो कर ही चुका हूं कि हर तरह से तुम्हारी तावेदारी करूंगा और जो कुछ तुम कहोगी बेउज्र बजा लाऊँगा, इस समय मैं तुम्हें एक भेद की बात बताता हूं जिसे जान कर बहुत प्रसन्न होओगी॥

नागर०। कहो क्या कहते हो? शायद तुम्हारी नेकचलनी का सबूत मिल जाय॥

भूत०। मेरे हाथ तो बँधे हैं खैर तुमही आओ और मेरी कमर से खञ्जर निकालो, उसके साथ एक पुरजा बंधा है खोल कर पढ़ो देखो क्या लिखा है॥

नागर भूतनाथ के पास गई और उसकी कमर से खञ्जर निकालना चाहा, खञ्जर पर हाथ पड़तेही उसके बदन में बिजली दौड़ गई और वह कांप कर ज़मीन पर गिर पड़ी और बेहोश होगई। भूतनाथ

पुकार उठा कि "वह मारा।" उस तिलिस्मी खञ्जर का हाल जो कमलिनी ने भूतनाथ को दिया था पाठक बखूबी जानतेही हैं कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं, इस समय वही खञ्जर भूतनाथ की कमर में था उसकी तासीर से नागर बिल्कुल बेखबर थी वह नहीं जानती थी कि जिसके पास उसके जोड़ की अँगूठी न हो वह उस खञ्जर को नहीं छू सकता॥

अब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ और अपने छूटने का उद्योग करने लगा परन्तु हाथ पैर बंधे रहने के कारण कुछ न कर सका, आखिर वह ज़ोर २ से चिल्लाने लगा जिसमें किसी आते जाते मुसाफिर के कान में आवाज पड़े तो वह आ कर भूतनाथ को छुड़ावे। दो घण्टे बीत गये मगर किसी मुसाफ़िर के कान में भूतनाथ की आवाज न पड़ी और तब तक नागर भी होश में आई और उठ बैठी॥
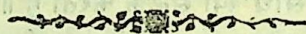
दूसरा बयान।

हम ऊपर लिख आये हैं कि "जब राजा बीरेन्द्रसिंह तिलिस्मी खँडहर से (जिसमें दोनों कुमार और तारासिंह इत्यादि गिरफ़्तार हो गये थे) निकल कर रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए तो तेजसिंह उनसे कुछ कह सुन कर अलग हो गये और उनके साथ रोहतासगढ़ न गये।" अब हम यह लिखना मुनासिब समझते हैं कि राजा बीरेन्द्रसिंह से अलग हो कर तेजसिंह ने क्या किया?

एक दिन और रात उस खँडहर के चारो तरफ जङ्गल और मैदान में तेजसिंह घूमते रहे मगर कुछ काम न चला। दूसरे दिन वह एक छोटे से पुराने शिवालय के पास पहुंचे जिसके चारो तरफ बेल और पारिजात के पेड़ बहुत ज्यादे थे जिनके सबब से वह स्थान बहुतही

ठण्ढा और रमनीक मालूम होता था। तेजसिंह शिवालय के अन्दर गये शिवजी का दर्शन करने बाद बाहर निकल आये उसी जगह से बेलपत्र तोड़ कर शिवजी की पूजा की और फिर उस चश्मे के किनारे जो मन्दिर के पीछे की तरफ बह रहा था बैठ रहे और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये ? इस समय तेजसिंह एक मामूली जमीदार की सूरत में थे और यह स्थान भी उस खंडहर से बहुत दूर न था॥

थोड़ी देर बाद तेजसिंह के कान में आदमियों के बोलने की आवाज आई, बात साफ समझ में नहीं आती थी इससे मालूम हुआ कि वे लोग कुछ दूर पर हैं। तेजसिंह ने सिर उठा कर देखा तो कुछ दूर पर दो आदमी दिखाई पड़े जो उसी शिवालय की तरफ आ रहे थे, तेजसिंह चश्मे के किनारे से उठ खड़े हुए और एक झाड़ी के अन्दर छिप कर देखने लगे कि वे लोग कहां जाते और क्या करते हैं। उन दोनों की पोशाक उन लोगों से बहुत कुछ मिलती थी जो तारासिंह की चालाकी से तिलिस्मी खंडहर में बेहोश हुए थे और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिंह साधू बाबा (तिलिस्मी दारोगा) के सहित कैदी बना कर रोहतासगढ़ ले गये थे, इस लिये तेजसिंह ने सोचा कि ये दोनों आदमी भी उन्हीं लोगों में से हैं जिनकी बदौलत हम लोग दुःख भोग रहे हैं अस्तु उन लोगों में से किसी को फंसा कर अपना काम निकालना चाहिये॥

तेजसिंह के देखते ही देखते वे दोनों आदमी वहां पहुंच कर शिवलय के अन्दर घुस गये और लगभग दो घड़ी के बीत जाने पर भी बाहर न निकले। तेजसिंह ने छिपकर राह देखना उचित न जाना वह झाड़ी में से निकल कर शिवालय के पास आये, झांक कर देखा तो शिवालय के अन्दर किसी आदमी की आहट न मिली,

ताज्जुब करते हुए शिवलिङ्ग के पास तक चले गये मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी। तेजसिंह तिलिस्मी कारखाने और अद्भुत मकानों तथा तहखानों के हालत से बहुत कुछ वाकिफकार हो चुके थे इस लिये समझ गये कि इस शिवालय के अन्दर कोई गुप्त राह, सुरङ्ग या तहखाना अवश्य है और इसी सबब से वे दोनों आदमी गायब हो गये हैं ॥

शिवालय के सामने की तरफ बेल का पेड़ था उसी के नीचे तेज-सिंह यह निश्चय करके बैठ गये कि जब तक वे लोग अथवा उनमें से कोई बाहर न आवेगा तब तक यहां से न टलूंगा। आखिर घण्टे भर के बाद उन्हीं दोनों में से एक आदमी शिवालय के अन्दर से बाहर आता हुआ दिखाई पड़ा, उसे देखते ही तेजसिंह उठ खड़े हुए और निगाह मिलतेही तेजसिंह ने झुक कर सलाम किया और कहा, "ईश्वर आपका भला करे मेरे भाई की जान बचाइये ॥"

आदमी०। तू कौन है और तेरा भाई कहां है ?

तेज०। मैं जमींदार हूं (हाथ का इशारा कर के) उस झाड़ी के दूसरी तरफ मेरा भाई है बेचारे को एक बुढ़िया व्यर्थ मार रही है, आप पुजेरी जी हैं और धर्मात्मा हैं किसी तरह मेरे भाई को बचा-इये इसी लिये मैं यहां आया हूं (गिड़गिड़ा कर) बस अब देर न कीजिये ईश्वर आपका भला करे ॥

तेजसिंह की बातें सुनकर उस आदमी को बड़ाही ताज्जुब हुआ और बेशक ताज्जुब की बात ही थी क्योंकि तेजसिंह बदन से मज-और निरोग मालूम होते थे, देखने वाला कह सकता है कि बेशक उसका भाई भी वैसा ही होगा, फिर ऐसे दो आदमी के मुकाबिले में एक बुड्ढी औरत का जबर्दस्त रहना ताज्जुब नहीं तो क्या है ?

आखिर बहुत कुछ सोच बिचार कर उस आदमी ने तेजसिंह से

कहा, "खैर चलो देखें वह बुढ़िया कैसी पहलवान है ॥"

उस आदमी को साथ लिये हुए तेजसिंह शिवालय से कुछ दूर चले गये और एक गुञ्जान झाड़ी के पास पहुंच कर इधर उधर घूमने लगे ॥

आदमी०। तुम्हारा भाई कहां है ?

तेजसिंह०। उसी को तो ढूंढ़ रहा हूं ॥

आदमी०। क्या तुम्हें याद नहीं कि उसे किस जगह छोड़ गये थे ?

तेज०। राम राम ! कैसे बेवकूफ से पाला पड़ा है ! अरे कम्बख़्त जब जगह याद नहीं तो यहां तक कैसे आये ?

आदमी०। पाजी कहीं का ! हम तो तेरी मदद को आये और तू हमें कम्बख़्त कहता है ?

तेज०। बेशक तू कम्बख़्त बल्कि कमीना है, मेरी मदद क्या करेगा जब कि तू अपने ही को नहीं बचा सकता ॥

इतना सुनते ही वह आदमी चौकन्ना हो गया और बड़े गौर से तेजसिंह की तरफ देखने लगा, जब उसे निश्चय होगया कि यह कोई ऐयार है तब उसने खञ्जर निकाल कर तेजसिंह पर वार किया। तेज-सिंह ने वार बचा कर उसकी कलाई पकड़ ली और एक झटका ऐसा दिया कि खञ्जर उसके हाथ से निकल कर दूर जा गिरा, वह और कुछ चोट करने की फिक्र में था कि तेजसिंह ने उसकी गरदन में हाथ डाल दिया और बात की बात में जमीन पर दे मारा, वह घबड़ा कर चिल्लाने लगा मगर कुछ काम न चला क्योंकि उसके नथुनों में बेहोशी की दवा जबरदस्ती ठूंस दी गई और वह एक छींक मार कर बेहोश होगया ॥

उस बेहोश आदमी को उठा कर तेजसिंह एक ऐसी झाड़ी में घुस गये जहां से आते जाते मुसाफिरों को वे बखूबी देख सकते मगर

उन पर किसी की निगाह न पड़ती। उस बेहोश आदमी को जमीन पर लेटा देने बाद तेजसिंह चारो तरफ देखने लगे जब किसी को न पाया तो धीरे से बोले, "अफसोस! इस समय मैं अकेला हूं यदि मेरा कोई साथी होता तो इसे भेजवा कर बेखौफ हो जाता और बेफिक्री के साथ काम करता। खैर कोई चिन्ता नहीं अब तो काम निकालना ही पड़ा॥

तेजसिंह ने ऐयारी का बटुआ खोला और आइना निकाल कर सामने रक्खा, अपनी सूरत ठीक वैसीही बनाई जैसा कि वह आदमी था इसके बाद अपने कपड़े उतार कर रख दिये और उसके बदन से कपड़े उतार कर आप पहिन लेने बाद उसकी सूरत बनाने लगे। किसी तेज दवा से उसके चेहरे पर कई जख्म के दाग ऐसे बनाये कि सिवाय तेजसिंह के दूसरा छुड़ाही नहीं सकता था और मालूम होता था कि ये जख्म के दाग वर्षों से उसके चेहरे पर मौजूद हैं। इसके बाद तमाम बदन स्याह मसाले से रङ्ग दिया, वह मसाला खुद तेजसिंह ने अपनी अक्ल से तैयार किया था, उसमें यह गुन था कि जिस जगह लगाया जाय वह आबनूस के रङ्ग की तरह स्याह हो जाय और जब तक केले के अर्क से न धोया जाय वह दाग किसी तरह न छूटे चाहे वर्षों बीत जायँ॥

वह आदमी गोरा था मगर अब पूर्णरूप से काला होगया चेहरे पर कई जख्म के निशान भी बन गये। तेजसिंह ने बड़े गौर से उस की सूरत देखी और इस ढब से गरदन हिला कर उठ खड़े हुए कि जिससे उनके दिल का भाव साफ झलक गया, तेजसिंह ने सोच लिया कि बस उसकी सूरत बखूबी बदल गई अब कोई कारीगरी करने की आवश्यकता नहीं है और वास्तव में ऐसा ही था, दूसरे की बात तो दूर रही यदि उसकी मां भी उसे देखती तो अपने लड़के

को कभी न पहिचान सकती ॥

उस आदमी के कमर के साथ भी ऐयारी का बटुआ था तेजसिंह ने उसे खोल लिया और अपने बटुए की कुल चीजें उसमें रख अपना बटुआ उसकी कमर से बांध दिया और वहां से रवाने हुए ॥

तेजसिंह फिर उसी शिवालय के सामने आये और बेल के पेड़ के नीचे बैठ कर कुछ गाने लगे। दिन केवल घण्टा भर बाकी रह गया था जब वह दूसरा आदमी भी शिवालय के बाहर निकला और तेजसिंह को जो उसके साथी की सूरत में थे पेड़ के नीचे मौजूद पा कर गुस्से में आगया और उसके पास जाकर कड़ी आवाज में बोला, "वाहरे बिहारीसिंह ! अभी तक आप यहां बैठे गीत गाते हैं !!"

तेजसिंह को इतना मालूम हो गया कि हम जिसकी सूरत में हैं उसका नाम बिहारीसिंह है। अब तेजसिंह जब तक अपनी असली सूरत में न आवें हम भी इन्हें बिहारीसिंह के नाम से लिखेंगे, हां कहीं कहीं तेजसिंह लिख जायँ तो कोई हर्ज भी नहीं ॥

बिहारीसिंह ने अपने साथी की बात सुन कर गाना बन्द किया और उसकी तरफ देख के कहा :—

बिहारी०। (दो तीन दफे खांस कर) बोलो मत इस समय मुझे खांसी हो गई है आवाज भारी हो रही है जितनी कोशिश करता हूं उतना ही गाना बिगड़ा जाता है, खैर तुम भी आजाओ और जरा सुर में सुर मिला कर मेरे साथ गाओ तो:—

वह०। क्या बात है ! मालूम होता है तुम कुछ पागल होगये हो, मालिक का काम गया जहन्नुम में हम लोग बैठे गीत गाया करें ॥

बिहारी०। वाह ! जरा सी बूटी ने क्या मजा दिखाया, अहा ! हा हा, जीते रहो पट्ठे, ईश्वर तुम्हारा भला करे खूब सिद्धी पिलाई !!

वह०। बिहारीसिंह ! यह तुम्हें क्या होगया तुम तो ऐसे न थे ?

बिहारी०। जब न थे तब बुरे थे जब हैं तो अच्छे हैं, तुम्हारी बात ही क्या है, सत्रह हाथी जलपान करके बैठा हूं, कम्बख़्त ने जरा नमक भी नहीं दिया फीका ही उड़ाना पड़ा ही ही ही ही, आओ एक गदहा तुम भी खालो, नहीं नहीं सूअर अच्छा कुत्ता ही सही, ओ हा हा हा क्या दूर की सूझी, बचा जी ऐयारी करने बैठे हैं, हल जोतने आता ही नहीं जिन्न पकड़ने लगे ही ही ही ही बाहरे बूटी अभी तक जीभ चटचटाती है लो देख लो (जीभ चटचटा कर दिखाता है)॥

वह०। अफसोस !!

बिहारी०। अब अफसोस करने से क्या फायदा ? जो होना था हो गया, जाके पिण्डदान करो, हां यह तो बताओ पितर मिलौनी कब करोगे मैं जाता हूं तुम्हारी तरफ से ब्राह्मणों को नेवता दे आता हूं॥

वह०। (गरदन हिला कर) इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम पूरे पागल हो गये किसी ने कुछ खिला या पिला दिया है॥

बिहारी०। न इसमें सन्देह न उसमें सन्देह, पागल की बातचीत तो बिलकुल ही जाने दो क्योंकि तुम लोगों में केवल मैं ही हूं सो हूं बाकी सब पागल, खिलाने वाले की ऐसी तैसी पिलाने वाले का बोलवाला एक लोटा भांग दो सौ पैंतीस साढ़े तेरह आना लोटा नशा, ऐयारी के नुस्खे एक से एक बढ़ के याद हैं, जहाज की पाल भी खूब ही उड़ती है वाह ! कैसी अन्धेरी रात है बाप रे बाप, सूरज भी अस्त हुआ ही चाहता है, तुम भी नहीं हम भी नहीं अच्छा तुम भी सही बड़े अकिलमन्द हो अकिल अकिल अकिल मन्द मन्द मन्द (कुछ देर तक चुप रह कर) अरे बाप रे ! मैया रे मैया, बड़ा ही गजब होगया, मैं तो अपना नाम ही भूल गया, अभी तक तो याद था कि मेरा नाम बिहारीसिंह है मगर अब भूल गया तुम्हारे सिर की कसम जो कुछ भी याद हो, भाई यार दोस्त मेरे जरा बता तो दो मेरा नाम

क्या है ?

वह०। अफसोस ! रानी मुझी को दोष देंगी, कहेंगी कि हरनाम-सिंह अपने साथी की हिफाजत न कर सका॥

बिहारी०। ही ही ही ही वाहरे भाई हरनामसिंह ! अलिफ, बे, ते, टे, से, च, छ, ज, झ, उल्लू की दुम फाख्ता.....

हरनामसिंह को विश्वास हो गया किसी ऐयार की शैतानी से जिसने कुछ खिला या पिला दिया है हमारे साथी बिहारीसिंह पागल हो गया इसमें कोई सन्देह नहीं, उसने सोचा कि अब इससे कुछ कहना उचित नहीं किसी तरह फुसला कर घर ले चलना चाहिये॥

हरनाम०। अच्छा यार अब देर हो गई चलो घर चलें॥

बिहारी०। क्या हम औरत हैं कि घर चलें ! चलो जङ्गल में चलें, शेर का शिकार खेलें, रण्डी का नाच देखें, तुम्हारा गाना सुनें और सब के अन्त में तुम्हारे सिर्हाने बैठ कर रोएँ और हीहीहीहीहीही...

हरनाम०। खैर जङ्गल ही में चलो॥

बिहारी०। हम क्या साधू बैरागी या उदासी हैं कि जङ्गल में जायँ ? बस इसी जगह रहेंगे भङ्ग पीयेंगे चैन करेंगे, यह भी जङ्गल ही है तुम्हारे ऐसे गदहों का शिकार करेंगे, गदहे भी कैसे कि बस पूरे अन्धे (इधर उधर देख कर) सात पांच बारह और पांच तीन तीन घंटे बीत गए अभी तक भङ्ग लेकर नहीं आया, पूरा झूठा निकला मगर मुझसे बढ़के नहीं, बदमाश है लुच्चा है, अब उसका उसकी राह या सड़क नहीं देखूंगा, चलो भाई साहब चलें घरही की तरफ मुंह करना उत्तम है मगर मेरा हाथ पकड़ लो मुझे कुछ सूझता नहीं॥

हरनामसिंह ने गनीमत समझा और बिहारीसिंह का हाथ पकड़ घर की तरफ अर्थात् मायारानी के महल की तरफ ले चला। मगर वाहरे तेजसिंह ! पागल बन के क्या काम निकाला है। अब ये चाहे

दो सौ दफे चूकें मगर किसी की मजाल नहीं की शक करे। बिहारी-सिंह को मायारानी बहुत चाहती थी क्योंकि इसकी ऐयारी खूब चढ़ी बढ़ी थी इसलिये हरनामसिंह उसे ऐसी अवस्था में छोड़ कर अकेला नहीं जा सकता था। मजा तो उस समय होगा जब नकली बिहारीसिंह मायारानी के सामने होंगे और भूत की सूरत बने असली बिहारीसिंह भी पहुंचेगे ॥

बिहारीसिंह को साथ लिये हुए हरनामसिंह जमानियां * की तरफ रवाना हुआ। मायारानी वास्तव में जमानियां की रानी थी, इसके बाप दादे भी इसी जगह हुकूमत कर गए थे। जमानियां के सामने गङ्गा के किनारे से कुछ दूर हट कर एक बहुत ही खुशनुमा और लम्बा चौड़ा बाग था, जिसे वहां वाले "खास बाग" के नाम से पुकारते थे, उस बाग में राजा अथवा राजकर्मचारियों के सिवाय कोई दूसरा आदमी जाने नहीं पाता था। इस बाग के बारे में तरह तरह की गप्पें लोग उड़ाया करते थे मगर असल भेद वहां का किसी को मालूम न था। उस बाग के गुप्त भेदों को राजखानदान और दीवान तथा ऐयारों के सिवाय कोई गैर आदमी नहीं जानता था और न कोई जानने की कोशिश कर सकता था, यदि कोई गैर आदमी इस बाग में पाया जाता तो तुरत मार डाला जाता था। यह कायदा पुराने जमाने से चला आता था ॥

जमानियां में जिस छोटे किले के अन्दर मायारानी रहती थी उसमें से गङ्गा के नीचे नीचे एक सुरङ्ग भी उस बाग तक गई थी और उसी राह से मायारानी वहां आती जाती थी, उस सबब से

---

* "जमानियां" इसे लोग जमनियां भी कहते हैं, बनारस के पूरब गङ्गा के दाहिने किनारे पर आबाद है ॥

मायारानी का उस बाग में जाना और वहां से आना खास खास आदमियों के सिवाय किसी गैर को मालूम न होता था। किले और उस बाग का खुलासा हाल पाठकों को स्वयं मालूम हो जायगा इस जगह इतना लिखदेना मुनासिब मालूम देता है कि रामभोली का आशिक नानक तथा कमला ने उसी बाग में मायारानी का दर्बार देखा था॥

मजानियां पहुंचने तक बिहारीसिंह ने अपने पागलपन से हर-नामसिंह को बहुत ही तङ्ग किया और साबित कर दिया कि पढ़ा लिखा आदमी किस ढङ्ग का पागल होता है, यदि मायारानी का डर न होता तो हरनामसिंह अपने साथी को बेशक छोड़ देता और हजार खराबी के साथ घर तक ले जाने की तकलीफ न उठाता॥

कई दिन के बाद बिहारीसिंह को साथ लिये हुए हरनामसिंह जमानियां के किले में पहुंचा, उस समय पहर भर रात जा चुकी थी, किले के अन्दर पहुंचने पर मालूम हुआ कि इस समय मायारानी बाग में है लाचार बिहारीसिंह को साथ लिये हुए हरनामसिंह को उस बाग में जाना पड़ा इसलिये बिहारीसिंह (तेजसिंह) ने किले और सुरङ्ग का रास्ता भी बखूबी देख लिया। सुरङ्ग के अन्दर दस पन्द्रह कदम जाने बाद बिहारीसिंह ने हरनामसिंह से कहा :—

बिहारी०। सुनो जी! इस सुरङ्ग के अन्दर सैकड़ों दफे हम आ चुके आज भी तुम्हारे मुलाहिजे से चले आये मगर आज के बाद फिर कभी यहां लाओगे तो मैं तुम्हें कच्चा ही खा जाऊंगा और इस सुरङ्ग को बर्बाद कर दूंगा, अच्छा यह बताओ मुझे कहां लिये जाते हो?

हरनाम०। मायारानी के पास॥

बिहारी०। तब तो मैं न जाऊंगा क्योंकि मैं सुन चुका हूं कि मायारानी आजकल आदमियों को खाया करती है, तुम भी तो कल

तीन गदहिया खा चुके है। ! मायारानी के सामने चलो तो सही देखो मैं तुम्हें कैसा छकाता हूं, ही ही ही बचा तुम्हें छकाने से क्या होगा मायारानी को छकाऊं तो कुछ मजा भी मिले। "भज मन राम चरन सुखदाई" (भजन गाता है) ॥

बड़ी मुश्किल से सुरङ्ग खतम किया और बाग में पहुंचे, उस सुरङ्ग का दूसरा सिरा बाग में एक कोठड़ी के अन्दर निकला था। जिस समय वे दोनों कोठड़ी के बाहर हुए तो उस दालान में पहुंचे जिसमें मायारानी का दर्बार होता था। इस समय मायारानी उसी दालान में थी मगर दर्बार का सामान न था केवल अपनी बहिन और सखी सहेलियों के साथ दिल बहला रही थी। मायारानी पर निगाह पड़ते ही उसकी पोशाक और उसके गम्भीर भाव ने बिहारीसिंह (तेजसिंह) को निश्चय करा दिया कि मालिक यही है ॥

हरनामसिंह और बिहारीसिंह को देख कर मायारानी को एक प्रकार की खुशी हुई और उसने बिहारीसिंह की तरफ देख कर पूछा, "कहो क्या हाल है ?"

बिहारी०। रात अन्धेरी है, पानी खूब बरस रहा है काई फट गई, दुश्मन ने सिर निकाला, चोर ने घर देख लिया, भूख के मारे पेट फूल गया, तीन दिन से भूखा हूं, कल का खाना अभी तक हजम नहीं हुआ, मुझ पर बड़े अन्धेर का पत्थर आटूटा, बचाओ बचाओ ॥

बिहारीसिंह के बेतुके जवाब से मायारानी घबड़ा गई सोचने लगी कि इसको क्या हो गया जो बेमतलब की बातें बक गया ! आखिर मायारानी ने हरनामसिंह की तरफ देख कर पूछा—बिहारी क्या कह गया मेरी समझ में कुछ भी न आया ?

बिहारी०। आहा हा क्या बात है ! तुमने मारा हाथ पसारा, छुरा लगाया खञ्जर खाया, शेर लड़ाया गीदड़ खाया, राम लिखाया नहीं

मिटाया, फांस लगाया आप चुभाया, ताड़ खुजाया खून बहाया, समझ खिलाड़ी बूझ मेरे लल्लू, हा हा हा भला समझो तो ॥

मायारानी और भी घबड़ाई, बिहारीसिंह का मुंह देखने लगी। हरनामसिंह मायारानी के पास गया और धीरे से बोला, "इस समय मुझे खेद के साथ कहना पड़ा कि बेचारा बिहारीसिंह पागल हो गया मगर ऐसा पागल नहीं है कि हथकड़ी बेड़ी की जरूरत पड़े क्योंकि किसी को दुःख नहीं देता केवल बकता बहुत है और अपने पराये की होश नहीं है, कभी कभी बहुत अच्छी तरह बातें करता है मालूम होता है कि बीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार ने धोखा दे कर इसे कुछ खिला दिया है ॥"

माया०। तुम्हारा और इसका साथ क्यों कर छुटा और क्या हुआ कुछ खुलासा कहो तो हाल मालूम हो ॥

हरनाम०। पहिले इनके लिये कुछ बन्दोबस्त कर दीजिये फिर सब हाल कहूंगा, वैद्यजी को बुला कर जहां तक जल्द हो इनका इलाज करना चाहिये ॥

बिहारी०। यह कानाफुसकी अच्छी नहीं, मैं समझ गया कि तुम मेरी चुगली खाते हो। (चिल्ला कर) दोहाई रानी साहब की इस कम्बख्त हरनामसिंह ने मुझे मार डाला, जहर खिला कर मार डाला मैं जिन्दा नहीं हूं, मैं तो मरने बाद भूत होकर यहां आया हूं तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं मैं अब वह बिहारीसिंह नहीं हूं मैं कोई दूसरा ही हूं। हाय हाय बड़ा गजब हुआ! या ईश्वर उन लोगों से तू ही समझियो जो भले आदमियों को पकड़ पकड़ पिंजरे में बन्द किया करते हैं ॥

माया०। अफसोस! इस बेचारे की क्या दशा हो गई! मगर हरनामसिंह! यह तो तुम्हारा ही नाम लेता है कहता है हरनामसिंह

ने जहर खिला दिया॥

हरनाम०। इस समय मैं इसकी बातों से रञ्ज नहीं होता क्योंकि इस बेचारे की अवस्था ही दूसरी हो रही है॥

माया०। इसकी फिक्र जल्द करना चाहिये तुम जाओ और वैद्य जी को बुला लाओ॥

हरनाम०। बहुत अच्छा॥

माया०। (बिहारी से) तुम मेरे पास आकर बैठो, कहो तुम्हारा मिजाज कैसा है?

बिहारी०। (मायारानी के पास बैठ कर) मिजाज मिजाज! है, बहुत है, अच्छा है, क्यों अच्छा है, सो ठीक है॥

माया०। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कौन हो?

बिहारी०। हां मालूम है। मैं महाराजाधिराज श्रीबीरेन्द्रसिंह हूं (फिर कुछ सोच कर) नहीं वह तो अब बुड्ढे हो गये मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह बनूंगा क्योंकि वह बड़े खूबसूरत हैं, औरतें देखने के साथ ही उन पर रीझ जाती हैं, अच्छा तो अब मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह हूं, (कुछ सोच कर) नहीं नहीं वह तो अभी लड़के हैं और उन्हें ऐयारी भी नहीं आती, मुझे बिना ऐयारी के चैन नहीं अतएव मैं तेजसिंह बनूंगा बस यही बात पक्की रही, मुनादी फिरवा दीजिये कि लोग मुझे तेजसिंह कह के पुकारा करें॥

माया०। (मुसकुरा कर) बेशक ठीक है अब हम भी तुमको तेजसिंह कह के पुकारेंगे॥

बिहारी०। ऐसा ही उचित है, जो मज़ा दिन भर भूखे रहने में है वह मजा आपकी नौकरी में है, जो मजा डूब मरने में है वही मज़ा आपका काम करने में है॥

माया०। सो क्या?

बिहारी०। इतना दुःख भोगा, लड़े झगड़े, सर के बाल नोच डाले सब कुछ किया मगर अभी तक आंख से अच्छी तरह न देखा, यह मालूमही न हुआ कि किसके लिये किसको फांसा और उस फँसाई से फंसने वाले की सूरत अब कैसी है ॥

माया०। मेरी समझ में न आया कि इस कहने से तुम्हारा मतलब क्या है ॥

बिहारी०।(सिर पीटकर) अफसोस ! हम ऐसे नासमझ के साथ हैं, ऐसी जिन्दगी ठीक नहीं, ऐसा खून किसी काम का नहीं, जो कुछ मैं कह चुका हूं जब तक उसका कोई मतलब न समझेगा और मेरी इच्छा पूरी न होगी तब तक मैं किसी से न बोलूंगा, न खाऊंगा, न सोऊंगा, न एक न दो न चार, हजार पांच सौ कुछ नहीं, चाहे जो हो मैं देखूंगा और देखूंगा ॥

माया० । क्या देखोगे ?

बिहारी०। मुंह से तो मैं बोलने वाला नहीं आपको समझने की गौं हो तो समझिये ॥

माया० । भला कुछ कहो भी तो सही ॥

बिहारी० । समझ जाइये ॥

माया० । कौन चीज ऐसी है जो तुम्हारी देखी नहीं है ॥

बिहारी० । देखी है मगर अच्छी तरह देखूंगा ॥

माया० । क्या देखोगे ?

बिहारी० । समझिये ॥

माया०। कुछ कहोगे भी कि समझिये समझिये बकतेही जाओगे ॥

बिहारी० । अच्छा एक हर्फ कहो तो कह दूं ॥

माया० । खैर यही सही ॥

बिहारी० । कै कै कै कै कै ॥

माया० । (मुसकुरा कर) कैदियों को देखोगे ?

बिहारी०। हा हा हा हा, बस बस, वही वही वही ॥

माया०। उन्हें तो देख ही चुके हो तुम लोगों ने तो गिरफ़ार ही किया है ॥

बिहारी०। फिर देखेंगे सलाम करेंगे, नाच नचावेंगे ताक धिना-धिन नाचो भालू (उठ कर कूदता है) ॥

मायारानी बिहारीसिंह को बहुत मानती थी। मायारानी के कुल ऐयारों का वह सर्दार था और वास्तव में वह बहुत ही तेज और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद था, यद्यपि इस समय वह पागल है तथापि मायारानी को उसकी खातिर मञ्जूर है। मायारानी हँसकर उठ खड़ी हुई और बिहारीसिंह को साथ लिये हुए उस कोठड़ी में चली गई जिसमें सुरङ्ग का रास्ता था, दर्वाजा खोल कर सुरङ्ग के अन्दर गई। सुरङ्ग में कई शीशे की हांडियां लटक रही थीं और रोशनी बखूबी हो रही थी। मायारानी लगभग पचास कदम के जाकर रुकी, उस जगह दीवार में एक छोटी सी अलामारी बनी हुई थी। माया-रानी की कमर में जो सोने की जञ्जीर थी उसके साथ तालियों का एक छोटासा गुच्छा लटक रहा था, मायारानी ने वह गुच्छा निकाला और उसी में की एक ताली लगा कर अलामारी खोली, अलामारी के अन्दर निगाह करने से सीढ़ियां नजर आईं जो नीचे उतर जाने के लिये थीं, वहां भी एक शीशे की कन्दील में रोशनी हो रही थी। बिहारीसिंह को साथ लिये हुए मायारानी नीचे उतरी, अब बिहारी-सिंह ने अपने को ऐसी जगह पाया जहां लोहे के जँगले वाली कई कोठड़ियां थी और हर एक कोठड़ी का दर्वाजा मजबूत ताले से बन्द था, उन कोठड़ियों में हथकड़ी बेड़ी से बेबस, उदास और दुखी केवल चटाई पर लेटे अथवा बैठे हुए क़ैदियों की सूरत दिखाई देती

थी। ये कोठड़ियां गोलाकार ऐसे ढङ्ग से बनी हुई थीं कि हर एक कोठड़ी में अलग अलग कैद रहने पर भी कैदी लोग आपस में बातें कर सकते थे॥

सबके पहिले बिहारीसिंह की निगाह जिस कैदी पर पड़ी वह तारासिंह था जिसे देखते ही बिहारीसिंह खिलखिला कर हँसा और चारो तरफ देख न मालूम क्या क्या बक गया जिसे मायारानी कुछ भी न समझ सकी, इसके बाद बिहारीसिंह ने मायारानी की तरफ देखा और कहा :—

"छिः छिः मुझे आप इन कम्बख़्तों के सामने क्यों ले आईं? मैं इन लोगों की सूरत नहीं देखा चाहता मैं तो कै देखूंगा कै बस केवल कै देखूंगा और कुछ नहीं। आप जब तक चाहें यहां रहें मगर मैं दम भर नहीं रह सकता अब कै देखूंगा कै, बस कै देखूंगा, बस कै कै कै, केवल कै॥"

कै कै बकता हुआ बिहारीसिंह वहां से भागा और उस जगह आकर बैठ गया जहां मायारानी से पहिले पहिल मुलाकात हुई थी। बिहारीसिंह की बदहवासी देख कर मायारानी घबड़ाई और जल्दी जल्दी सीढ़ियों पर चढ़ कर कैदखाने का ताला बन्द करने बाद अपनी जगह पर आई और वहां लम्बी लम्बी सांसें लेते बिहारीसिंह को बैठे हुए पाया। मायारानी की वे सहेलियां भी उसी जगह बैठी थीं जिन्हें छोड़ कर मायारानी कैदखाने की तरफ गई थी॥

मायारानी ने बिहारीसिंह से भागने का सबब पूछा मगर उसने कुछ जवाब न दिया, मायारानी ने कई तरह के प्रश्न किये मगर बिहारीसिंह ने ऐसी चुप्पी साधी कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं। मालूम होता था कि यह जन्म का गूंगा और बहिरा है न कुछ सुनता है न कुछ बोल सकता है, मायारानी की सहेलियों ने भी बहुत कुछ

जोर मारा मगर बिहारीसिंह ने मुंह न खोला, इसी परेशानी में मायारानी को बिहारीसिंह की हालत पर अफसोस करते हुए घण्टा भर बीत गया और बैद्य को जिनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी अपने साथ लिये हुए हरनामसिंह भी आ पहुंचा ॥

वैद्यराज ने उस अनोखे पागल की जांच की और अन्त में यह निश्चय किया कि बेशक इसे कोई ऐसी दवा खिलाई गई है जिसके असर से यह पागल होगया है, यदि इसी समय इसका इलाज किया जाय तो एकही दो दिन में आराम हो सकता है । मायारानी ने इलाज करने की आज्ञा दी और बैद्यराज ने अपने पास से एक जड़ाऊ डिबिया निकाली जो कई तरह की दवाओं से भरी हुई हमेशे उनके पास रहा करती थी ॥

बैद्यराज को अनोखे पागल की जांच में कुछ भी तकलीफ न हुई, बिहारीसिंह ने नाड़ी दिखाने में उज्र न किया और अन्त में दवा की वह गोली भी खा गया जो बैद्यराज ने अपने हाथ से उसके मुंह में रख दी थी । बिहारीसिंह ने अपने को ऐसा बनाया जिससे देखने वालों को विश्वास होगया कि वह दवा खा गया परन्तु उस चालाक पागल ने गोली दांतों के नीचे छिपा ली और थोड़ी ही देर में इस ढब से दवा थूक दी कि किसी को गुमान तक न हुआ ॥

आधी घड़ी तक उछल कूद करने बाद बिहारीसिंह जमीन पर गिर पड़ा और सवेरा होने तक उसी तरह पड़ा रहा । बैद्यजी ने नब्ज देख कर कहा कि यह दवा की तासीर से बेहोश होगया है इसे कोई छेड़े नहीं, आशा है कि जब इसकी आंख खुलेगी तो अच्छी तरह बातचीत करेगा । बिहारीसिंह चुपचाप पड़ा हुआ ये बातें सुन रहा था । मायारानी बिहारीसिंह की हिफाजत के लिये कई लौंडियां छोड़ दूसरे कमरे में चली गई और एक नाजुक पलङ्ग पर जो वहां बिछा

हुआ था सो रही ॥

सूर्योदय से पहिलेही मायारानी उठी और हाथ मुंह धो कर उस जगह पहुंची जहां बिहारीसिंह को छोड़ गई थी। हरनामसिंह पहिले ही वहां जा चुका था। बिहारीसिंह को जब मालूम होगया कि माया-रानी उसके पास आकर बैठ गई है तो वह भी दो तीन करवटें लेकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारो तरफ देखने लगा ॥

मायारानी०। अब तुम्हारा क्या हाल है ?

बिहारी०। हाल क्या कहूं मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि मैं यहां क्योंकर आया! मेरी आवाज क्योंकर बैठ गई और इतनी कम-जोरी क्यों मालूम होती है कि मैं उठ कर चल फिर नहीं सकता ॥

माया०। ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि तुम्हारी जान बच गई, तुम तो पूरे पागल हो गये थे बैद्य जी ने भी ऐसी दवा दी कि एक ही खुराक में फायदा होगया उन्होंने इनाम का काम किया। तुम अपना हाल तो कहो तुम्हें क्या हो गया था ?

बिहारी०। (हरनामसिंह की तरफ देख कर) मैं एक ऐयार के फेर में पड़ गया था मगर पहिले आप कहिये कि मुझे किस अवस्था में कहां पाया ?

हरनाम०। आप मुझसे यह कह कर कि "तुम थोड़ा सा काम जो बच रहा है उसे पूरा कर के जमानियां चले जाना मैं कमलिनी से मुलाकात करके और जिस तरह होगा उसे राजी करके जमानियां में आऊंगा।" खंडहर वाले तहखाने से बाहर चले गये परन्तु काम पूरा करने बाद मैं सुरङ्ग के बाहर निकला तो आपको शिवालय के सामने पेड़ के नीचे विचित्र दशा में बैठे पाया (पागलपन की बात-चीत और मायारानी के पास तक आने का खुलासा हाल कहने के बाद) मालूम होता है आप कमलिनी के पास नहीं गये ॥

बिहारी०। (मायारानी से) जैसा धोखा मैंने अबकी खाया आज तक नहीं खाया था। हरनामसिंह का कहना ठीक है, जब मैं सुरङ्ग से निकल कर शिवालय के बाहर हुआ तो एक आदमी पर नजर पड़ी जो मामूली जमींदार की सूरत में था, वह मुझे देखते ही मेरे पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि "पुजेरी जी महाराज! किसी तरह मेरे भाई की जान बचाइये।" मैंने उससे पूछा कि तेरे भाई को क्या हुआ? उसने जवाब दिया कि उसे एक बुढ़िया बेतरह मार रही है किसी तरह उसके हाथ से छुड़ाइये। वह जमींदार बहुत ही मजबूत और मोटा ताजा था। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि वह कैसी बुढ़िया है जो ऐसे दो भाइयों से नहीं हारती! आखिर मैं उसके साथ चलने पर राजी हो गया, वह मुझे शिवालय से कुछ दूर एक झाड़ी में ले गया। वहां कई आदमी छिपे हुए बैठे थे, उस जमींदार के इशारे से सभों ने मुझे घेर लिया और एक ने चांदी की लुटिया मेरे सामने रख दी और कहा कि यह भङ्ग है इसे पी जाओ। मुझे मालूम होगया कि यह जमींदार वास्तव में कोई ऐयार है जिसने मुझे धोखा दिया, मैंने भङ्ग पीने से इन्कार किया और वहां से लौटना चाहा मगर उन सभों ने भागने न दिया, थोड़ी देर तक मैं उन लोगों से लड़ा मगर क्या कर सकता था क्योंकि वे लोग गिनती में पन्द्रह से कम न थे, आखिर उन लोगों ने पटक कर मुझे मारना शुरू किया और जब मैं बेदम होगया तो वह भङ्ग या दवा जो कुछ हो मुझे जबरदस्ती पिला दी बस इसके बाद मुझे कुछ भी खबर नहीं कि क्या हुआ॥

थोड़ी देर तक ताज्जुब की बातें कह कर बिहारीसिंह ने मायारानी का दिल बहलाया इसके बाद कहा कि मेरी तबीयत बहुत खराब हो रही है यदि कुछ देर तक बाग में टहलूं तो बेशक जी प्रसन्न हो

मगर कमजोरी इतनी बढ़ गई है कि स्वयम् उठने और टहलने की हिम्मत नहीं पड़ती। मायारानी ने कहा कि कोई हर्ज नहीं हरनाम-सिंह सहारा देकर तुम्हें टहलावेंगे मैं समझती हूं कि बाग की ताजी हवा खाने और फूलों की खुशबू सूंघने से तुम्हें बहुत कुछ फायदा पहुंचेगा॥

आखिर हरनामसिंह ने बिहारीसिंह का हाथ पकड़ के बाग में अच्छी तरह टहलाया और इस बहाने से तेजसिंह ने उस बाग को और वहां की इमारतों को अच्छी तरह देख लिया। बिहारीसिंह घूम फिर कर मायारानी के पास पहुंचेही थे कि एक लौंडी ने जो चोब-दार थी मायारानी के सामने आ कर और हाथ जोड़ कर कहा—"बाग के फाटक पर एक आदमी आया है और सरकार में हाजिर हुआ चाहता है, वह बहुत ही बदसूरत और काला कलूटा है परन्तु कहता है कि मैं बिहारीसिंह हूं मुझे किसी ऐयार ने धोखा दिया और चेहरे तथा बदन को ऐसे रङ्ग से रङ्ग दिया कि अभी तक साफ नहीं होता॥"

माया०। यह अनोखी बात सुनने में आई कि ऐयारों का रङ्गा हुआ रङ्ग और धोने से न छूटे! हां कोई कोई रङ्ग पक्का होता है मगर उसे भी ऐयार लोग छुड़ा सकते हैं (हँस कर) बिहारीसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है कि वह अपने चेहरे का रङ्ग न छुड़ा सके॥

बिहारी०। रहिये रहिये, मुझे शक पड़ता है शायद यह वही आदमी हो जिसने मुझे धोखा दिया बल्कि ऐसा कहना चाहिये कि मेरे साथ जबरदस्ती की (लौंडी की तरफ देख कर) उसके चेहरे पर जख्म के दाग भी हैं?

लौंडी०। जी हां, पुराने जख्म के कई दाग हैं?

बिहारी०। भौं के पास भी कोई जख्म का दाग है?

लौंडी०। एक आड़ा दाग है मालूम होता है कभी लाठी की चोट खाई है ॥

बिहारी०। बस बस यह वही आदमी है देखो जाने न पावे चण्डूल को यह खबरही नहीं कि बिहारीसिंह यहां पहुंच गया है (मायारानी की तरफ देख कर) यहां पर्दा करवा कर उसे बुलवाइये मैं भी परदे के अन्दर रहूंगा देखिये क्या मजा करता हूं, हां हरनामसिंह परदे के बाहर रहें देखें पहिचानता है या नहीं ॥

माया०। (लौंडी की तरफ देख कर) परदा करने के लिये कहो और नियमानुसार आंख में पट्टी बांध कर उसे यहां लिवा लाओ ॥

लौंडी०। वह यहां की हर चीजों का पूरा पूरा पता देता है, इस बाग के अन्दर आ चुका है ॥

बिहारी०। पक्का चोर है ताज्जुब नहीं कि यहां आ चुका हो खैर तुम लोगों को अपना नियम पूरा करना चाहिये ॥

हुक्म पाते ही लौंडियों ने परदे का इन्तज़ाम कर दिया और वह लौंडी जिसने बिहारीसिंह के आने की खबर दी थी इसलिये फाटक की तरफ रवाना हुई कि नियमानुसार आंख पर पट्टी बांध कर बिहारीसिंह को बाग के अन्दर ले आवे और मायारानी के सामने हाजिर करे ॥

इस जगह बाग का कुछ थोड़ा सा हाल लिख देना मुनासिब मालूम होता है। यह दो सौ बिगहे का बाग मजबूत चारदीवारी के अन्दर था, उसके चारो तरफ की दीवार बहुत मोटी, मजबूत और लगभग पचास हाथ के ऊंची थी, दीवार के ऊपरी हिस्से में तेज नोक और धार वाले लोहे के कांटे और फाल इस ढब से लगे हुए थे कि कामिल ऐयार भी दीवार लांघ कर बाग के अन्दर जाने का साहस नहीं कर सकते, कांटों के सबब यद्यपि कमन्द लगाने में सुबीता

था परन्तु उसके सहारे ऊपर चढ़ना बिलकुलही असम्भव था। इस चारदीवारी के अन्दर की जमीन जिसे हम बाग कहते हैं चार हिस्सों में बँटी हुई थी। पूरब तरफ आलीशान फाटक था जिसके अन्दर जा कर एक बाग जिसे पहिला हिस्सा कहना चाहिये मिलता था जिसकी चौड़ी चौड़ी रविशें ईंट और चूने से बनी हुई थीं, पश्चिम तरफ अर्थात् इस हिस्से के अन्त में बीस हाथ चौड़ी और इससे ज्याद ऊंची दीवार बाग की पूरी चौड़ाई तक बनी हुई थी जिसके नीचे बहुत सी कोठड़ियां थीं जो सिपाहियों के काम में आती थीं, उस दीवार के ऊपर चढ़ने के लिये खूबसूरत सीढ़ियां थीं और दीवार के ऊपर चढ़ जाने से बाग का दूसरा हिस्सा दिखाई देता था और सीढ़ियों की राह दीवार के नीचे उतर कर उस बाग में जाना पड़ता था। सिवाय इसके और कोई दूसरा रास्ता उस बाग में जिसे हम दूसरा हिस्सा कहते हैं जाने के लिये नहीं था। बाग के इसी दूसरे हिस्से में वह इमारत या कोठी थी जिसमें मायारानी दर्बार किया करती थी या जिसमें पहुंच कर नानक ने मायारानी को देखा था। पहिले हिस्से की अपेक्षा यह बाग विशेष खूबसूरत और सजा हुआ था। बाग के तीसरे हिस्से में जाने का रास्ता उसी मकान के अन्दर से था जिसमें मायारानी रहा करती थी। बाग के तीसरे हिस्से का हाल लिखना जरा मुश्किल है तथापि इमारत के बारे में इतना कह सकते हैं कि इस तीसरे हिस्से के बीचोबीच में एक बहुत ऊंचा बुर्ज था। उस बुर्ज के चारो तरफ कई मकान थे जिनके दालानों, कोठड़ियों, कमरों और बारहदरियों तथा तहखानों का हाल इस जगह लिखना कठिन है क्योंकि उन सभों को तिलिस्मी बातों से विशेष सम्बन्ध है, हां इतना कह सकते हैं कि उस बुर्ज में से बाग के चौथे हिस्से में जाने का रास्ता है मगर बाग के चौथे हिस्से में क्या है

उसका हाल लिखते कलेजा कांपता है, इस जगह हम उसका जिक्र करना मुनासिब नहीं समझते आगे चल कर किसी मौके पर उसका हाल लिखा जायगा ॥

जब वह लौंडी असली बिहारीसिंह को जो बाग के फाटक पर आया था लेने चली चली गई तो नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेज-सिंह ने मायारानी से कहा, "इसे ईश्वर की कृपा कहनी चाहिये कि वह शैतान ऐयार जिसने मेरे साथ जबरदस्ती की और ऐसी दवा खिलाई कि जिसके असर से मैं पागल ही होगया था घर बैठे फन्दे में आ गया ॥"

माया० । ठीक है मगर देखा चाहिये यहां पहुंच कर क्या रङ्ग लाता है ॥

बिहारी० । जिस समय वह यहां पहुंचे सबके पहिले हथकड़ी और बेड़ी उसके नजर करनी चाहिये जिसमें मुझे देख कर भागने का उद्योग न करे ॥

माया० । जो मुनासिब हो करो परन्तु मुझे आश्चर्य्य मालूम होता है कि वह ऐयार जब तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव कर चुका और तुम्हें पागल बना कर छोड़ चुका तो बिना अपनी सूरत बदले यहां क्यों चला आया ? ऐयारों से ऐसी भूल न होनी चाहिये । उसे मुनासिब था कि तुम्हारे या मेरे किसी और नौकर की सूरत बन कर आता ॥

बिहारी० । ठीक है मगर जो कुछ उसने किया वह भी उचित ही किया । मेरी या यहां के किसी और नौकर की सूरत बन कर उसका यहां आना तब अच्छा होता जब मुझे गिरफ्तार कर लेता ॥

माया० । मैं यह भी सोचती हूं कि तुम्हें गिरफ्तार न करके केवल पागलही बना कर छोड़ देने में उसने क्या फायदा सोच लिया ? मेरी समझ में उसने भूल की ॥

इतना कह कर मायारानी ने टटोलने की नीयत से नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह पर एक तेज निगाह डाली। तेजसिंह भी समझ गया कि मायारानी को मेरी तरफ से कुछ शक है और इस शक को मिटाने के लिये वह किसी तरह की जांच जरूर करेगी तथापि इस समय बिहारीसिंह (तेजसिंह) ने ऐसा गम्भीर भाव धारण किया कि मायारानी का शक ज्यादे न होने पाया। थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं और इसके बाद लौंडी असली बिहारीसिंह को लेकर आ पहुंची और आज्ञानुसार असली बिहारीसिंह परदे के बाहर बैठाया गया। अभी तक उसकी आंखों में पट्टी बँधी हुई थी॥

असली बिहारीसिंह की आंखों से पट्टी खोली गई और उसने चारो तरफ अच्छी तरह निगाह दौड़ाने बाद कहा, "बड़े खुशी की बात है कि मैं जीता जागता अपने घर में आ पहुंचा (हाथ का इशारा करके) इस बाग को और अपने इन साथियों को खुशी की निगाह से देखता हूं। मुझे इस बात का अफसोस नहीं है कि मायारानी ने मुझसे परदा किया क्योंकि जब तक मैं अपना बिहारीसिंह होना साबित न कर दूं तब तक इन्हें मुझ पर भरोसा न करना चाहिये मगर मुझे (हरनामसिंह की तरफ देख कर और इशारा करके) अपने इस अनूठे दोस्त हरनामसिंह पर अफसोस आता है क्योंकि इसने मेरी कुछ भी परवाह न की और मुझे ढूंढ़ने में कुछ भी कष्ट न उठाया। शायद इसका सबब यह हो कि वह ऐयार मेरी सूरत बन कर इसके साथ हो लिया हो जिसने मुझे धोखा दिया, अगर मेरा खयाल ठीक है तो वह ऐयार यहां जरूर आया होगा मगर ताज्जुब की बात है कि मैं चारो तरफ निगाह दौड़ाने पर भी उसे नहीं देखता। खैर यदि वह यहां आया है तो देख ही लूंगा कि बिहारीसिंह वह है या मैं हूं।

केवल इस बाग के चौथे हिस्से के बारे में सवाल करने से सारी कलई खुल जायगी॥"

असली बिहारीसिंह की बातों ने जो इस जगह पहुंचने के साथ ही उसने कहीं सभों पर अपना असर डाला। मायारानी के दिल पर तो ऐसा असर हुआ कि उसने बड़ी मुश्किल से अपने को सँभाला और फिर एक निगाह तेजसिंह के ऊपर डाली। तेजसिंह को यह क्या खबर थी कि यहां ऐसा बिचित्र बाग देखने में आवेगा और उसके हिस्सों अथवा दरजों के बारे में सवाल किये जायंगे। तेज-सिंह ने सोच लिया कि अब मामला बेढब हो गया काम निकलना अथवा राजकुमारों को छुड़ाना तो दूर रहा कोई दूसरा उद्योग करने के लिये मेरा बच कर यहां से निकल जाना ही मुश्किल हो गया क्योंकि मैं किसी तरह उसके सवालों का जवाब नहीं दे सकता और न इस बाग के गुप्त भेदों की मुझे खबर है॥

असली बिहारीसिंह अपनी बात कह कर चुप होगया और इस फिक्र में था कि मेरी बात का कोई जवाब दे ले तो मैं और कुछ कहूं मगर मायारानी की आज्ञा बिना कोई भी उसकी बातों का जवाब न दे सकता था। चालाक और धूर्त मायारानी न मालूम क्या सोच रही थी कि आधी घड़ी तक उसने सिर न उठाया इसके बाद उसने लौंडी की तरफ देख कर कहा, "हरनामसिंह को यहां बुलाओ॥"

हरनामसिंह परदे के अन्दर आया और मायारानी के सामने खड़ा हो गया॥

माया०। यह ऐयार जो अभी आया है बड़ी तेजी से बोल कर चुप बैठा है बड़ाही शैतान और धूर्त मालूम होता है, मैं इससे बहुत कुछ पूछा चाहती हूं परन्तु इस समय मेरे सर में दर्द है बात करना वा सुनना मुश्किल है तुम इस ऐयार को ले जाओ और चार नम्बर

के कमरे में उसके रहने का बन्दोबस्त कर दो जब मेरी तबीयत ठीक होगी तो देखा जायगा ॥

हरनामसिंह०। बहुत मुनासिब है,मैं सोचता हूं कि बिहारीसिंह को भी......

माया० । हां बिहारीसिंह भी दो चार दिन इसी बाग में रहें तो ठीक है क्योंकि यह इस समय बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रहे हैं यहां की आबोहवा से दो ही तीन दिन में यह ठीक हो जायँगे। इनके लिये बाग के तीसरे हिस्से का दो नम्बर वाला कमरा ठीक है जिसमें तुम रहा करते हो ॥

हरनाम० । मैं सोचता हूं कि पहिले बिहारीसिंह का बन्दोबस्त कर लूं तब उस शैतान ऐयार की फिक्र करूं ॥

माया० । हां ऐसा ही होना चाहिये ॥

हरनाम० । (नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह की तरफ देख कर) चलिये उठिये ॥

यद्यपि तेजसिंह को विश्वास हो गया कि अब बचाव की सूरत मुश्किल है तथापि उन्होंने हिम्मत न हारी और कार्रवाई सोचने से बाज न आये। इस समय चुपचाप हरनामसिंह के साथ चले जाना ही उन्होंने मुनासिब जाना ॥

तेजसिंह को साथ ले कर हरनामसिंह उस कोठड़ी में पहुंचा जिसमें सुरङ्ग का रास्ता था, इस कोठड़ी में दीवार के साथ लगी हुई छोटी छोटी कई अलामारियां थीं हरनामसिंह ने उनमें से एक अलामारी खोली मालूम हुआ कि यह दूसरी कोठड़ी में जाने का दरवाजा है। हरनामसिंह और तेजसिंह दूसरी कोठड़ी में गये,यह कोठड़ी बिलकुल अँधेरी थी तेजसिंह को मालूम न हुआ कि यह कितनी लम्बी और चौड़ी है। दस बारह कदम आगे बढ़ कर हरनामसिंह ने तेज-

सिंह की कलाई पकड़ ली और कहा, "बैठ जाइये" यह जमीन कुछ हिलती हुई मालूम हुई और इसके बाद इस तरह की आवाज आई जिससे तेजसिंह ने समझा कि हरनामसिंह ने किसी कल या पुरजे को छेड़ा है ॥

वह जमीन का टुकड़ा जिस पर दोनों ऐयार बैठे थे यकायक नीचे की तरफ धंसने लगा और थोड़ी देर के बाद दूसरी जमीन पर ठहर गया । हरनामसिंह ने हाथ पकड़ कर तेजसिंह को उठाया और दस कदम आगे बढ़ कर हाथ छोड़ दिया इसके बाद फिर घड़घड़ाहट की आवाज आई, तेजसिंह ने समझा कि वह जमीन का टुकड़ा जो नीचे उतर आया था फिर ऊपर की तरफ चढ़ गया । यहां तेजसिंह को सामने की तरफ कुछ उजाला मालूम हुआ वह उसी तरफ बढ़े मगर अपने साथ हरनामसिंह के आने की आहट न पा कर तेजसिंह ने हरनामसिंह को पुकारा मगर कुछ जवाब न मिला, अब तेजसिंह को विश्वास हो गया कि हरनामसिंह मुझे इस जगह कैद करके चलता बना । लाचार तेजसिंह उसी तरफ रवाना हुए जिधर कुछ उजाला मालूम होता था, लगभग पचास कदम के जाने बाद एक दर्वाजा मिला और उसके पार होने पर तेजसिंह ने अपने को एक बाग में पाया ॥

यह बाग भी हराभरा था और मालूम होता था कि इसकी रविशों पर अभी छिड़काव किया गया है मगर माली या किसी दूसरे आदमी का नाम भी न था । इस बाग में बनिस्बत फूलों के मेवों के पेड़ बहुत ज्यादे थे और छोटी सी नहर भी जारी थी जिसका पानी मोती की तरह साफ था तह की कंकड़ियां साफ दिखाई देती थीं । बाग के बीचोबीच में एक ऊंचा बुर्ज था और उसके चारों तरफ कई मकान, कमरे और दालान इत्यादि थे जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं । तेजसिंह सुस्त और उदास हो कर नहर के किनारे बैठ गए और न

मालूम क्या सोचने लगे। जो हो मगर अब तेजसिंह इस योग्य न रहे कि अपने को बिहारीसिंह कहें, उनकी बची बचाई कलई भी हरनामसिंह के साथ उस बाग में जाने पर खुल गई। क्या बिहारीसिंह तेजसिंह की तरह चुपचाप हरनामसिंह के साथ अनजान आदमियों की तरह चला जाता? क्या मायारानी अथवा उनका कोई ऐयार अब तेजसिंह को बिहारीसिंह समझ सकता है? कभी नहीं कभी नहीं, इन सब बातों को तेजसिंह भी बखूबी समझते थे और उन्हें विश्वास हो गया था कि अब वे कैद कर दिये गये॥

थोड़ी देर बाद यहां के मकानों को घूम घूम कर देखने के लिये तेजसिंह उठे मगर सिवाय एक कमरे के जिसके दरवाजे पर मोटे अक्षर में दो (२) का अङ्क लिखा हुआ था बाकी सब कमरे और मकान बन्द पाये। दो का नम्बर देखतेही तेजसिंह को ध्यान आया कि मायारानी ने इसी कमरे में मुझे रखने का हुक्म दिया है। उस कमरे में एक दर्वाजा और छोटी २ कई खिड़कियां थीं, अन्दर फर्श बिछा हुआ और कई तकिये भी मौजूद थे। तेजसिंह को भूख लगी हुई थी मेवों की कमी भी न थी उन्हीं से पेट भरा और नहर का पानी पी कर दो नम्बर वाले कमरे को अपना मकान या कैदखाना समझा॥

तीसरा बयान ।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है तेजसिंह उसी दो नम्बर वाले कमरे के बाहर सहनमें तकिया लगाये सो रहे हैं। चिराग बालनेका कोई सामान वहां मौजूद नहीं जिससे रोशनी करते, पास में कोई आदमी नहीं जिससे दिल बहलाते, बाग से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं कि कुमारों को छुड़ाने के लिये कोई बन्दोबस्त करते, लाचार तरह तरह के तरद्दुदों में पड़े उन पेड़ों पर नजर दौड़ा रहे थे जो सहन के सामने बहुतायत से लगे हुए थे ॥

यकायक पेड़ों की आड़ में रोशनी मालूम पड़ी, तेजसिंह घबड़ा कर ताज्जुब के साथ उसी तरफ देखने लगे, थोड़ी ही देर में मालूम हुआ कि कोई आदमी हाथ में चिराग लिये तेजी के साथ कदम बढ़ाता उनकी तरफ आ रहा है, देखते देखते वह आदमी तेजसिंह के पास आ पहुंचा और चिराग एक तरफ रख कर सामने खड़ा होगया और बोला, "जयमाया को ॥"

वह आदमी सिपाहियाना ठाठ में था, छोटी छोटी स्याह दाढ़ी से उसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा ढका हुआ था, मेयाना कद और शरीर से हृष्ट पुष्ट था । तेजसिंह ने भी यह समझ कर कि यह कोई ऐयार है जवाब में कहा, "जयमाया की ॥"

सिपाही० । (जो अभी आया है) ओस्ताद तुमने चालाकी तो खूब की थी मगर जल्दी करके काम बिगाड़ दिया ॥

तेज० । चालाकी क्या और जल्दी कैसी ?

सिपाही०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मायारानी के बाग में रूप बदल कर आने वाला ऐयार पागल बने बिना किसी दूसरी रीति से काम नहीं चला सकता परन्तु आपने जल्दी कर दी, दो चार दिन

और पागल बने रहते तो ठीक था। असली बिहारीसिंह की बातों का जवाब आपको देना न पड़ता और इस बाग के तीसरे या चौथे हिस्से का भेद आप से पूछा न जाता, अब तो सभों को मालूम होगया कि आप असली बिहारीसिंह नहीं बल्कि कोई ऐयार हैं॥

तेज०। खैर मायारानी जो चाहे समझे मगर तुम मेरे पास क्यों आये हो ?

सिपाही०। इसी लिये कि आपका हाल जानूं और जहां तक हो सके आपकी मदद करूं॥

तेज०। मैं अपना हाल सिवाय इसके और क्या कहूं कि मैं वास्तव में बिहारीसिंह हूं॥

सिपाही०। (हँस कर) क्या खूब! अभी तक आपका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ। मैं फिर कहता हूं कि आप मुझ पर भरोसा कीजिये और अपना ठीक ठीक नाम बताइये॥

तेज०। जब तुम यह समझते हो कि मैं ऐयार हूं तो क्या यह भी जानते हो कि ऐयार लोग किसी ऐसे बतोलिये पर जैसे कि आप हैं यकायकी भरोसा कर सकते हैं ?

सिपाही०। हां आपका कहना ठीक है ऐयारों को यकायकी किसी का विश्वास न करना चाहिये मगर मेरे पास एक ऐसी चीज है कि आपको झख मार के मुझ पर भरोसा करना पड़ेगा॥

तेज०। (ताज्जुब से) वह कौन सी ऐसी अनोखी चीज तुम्हारे पास है जिसमें इतना बड़ा असर है कि मुझे झख मार कर तुम पर भरोसा करना पड़ेगा ?

सिपाही०। "नेमचो रिक्त गन्थ *॥"

* "नेमचो रिक्त गन्थ" यह ऐयारी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ "खून से लिखी किताब का घर" है॥

"नेमचौ रिक्त ग्रन्थ" इस शब्द में न मालूम कैसा असर था कि सुनते ही तेजसिंह के रोंगटे खड़े होगये, सिर नीचे कर लिया, थोड़ी देर तक ऐसा मालूम होता था कि वह तेजसिंह नहीं हैं बल्कि पत्थर की कोई मूरत है। आखिर तेजसिंह एक लम्बी सांस लेकर उठ खड़े हुए और सिपाही का हाथ पकड़ कर बोले, "अब कहो तुम्हें मैं अपने साथियों में से कोई समझूं या अपना पक्का दुश्मन जानूं ?"

सिपाही०। दोनों में से कोई भी नहीं॥

तेज०। यह और भी ताज्जुब की बात है (कुछ सोच कर) हां ठीक है यदि तुम चोर होते तो इतनी दिलावरी के साथ मुझसे बातें न करते बल्कि मेरे सामने न आते लेकिन यह भी तो मालूम होना चाहिये कि तुम कौन हो ? क्या "रिक्तग्रन्थ" तुम्हारे पास है ?

सिपाही०। जी नहीं, यदि वह मेरे पास होता तो अब तक राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचा होता॥

तेज०। फिर यह शब्द तुमने कहां से सुना ?

सिपाही०। यह वही शब्द है जिसे आप लोग समय पड़ने पर आपुस में कह कर इस बात का परिचय देते हैं कि हम बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हैं॥

तेज०। हां बेशक यह वही शब्द है, तो क्या तुम बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हो ?

सिपाही०। नहीं, हां, होंगे॥

तेज०। (चिढ़ कर) तुम अजब मसखरे हो जी, साफ साफ क्यों नहीं कहते कि तुम कौन हो॥

सिपाही०। (हँस कर) क्या उस शब्द के कहने पर भी आप मुझ पर भरोसा न करेंगे ?

तेज०। (मुंह बना कर और बात में जोर देकर) हाय हाय! कह

तो दिया कि भरोसा किया भरोसा किया भरोसा किया, झखमारा और भरोसा किया । अब भी कुछ कहोगे या नहीं ? अपना नाम बताओगे या नहीं ?

सिपाही०। अच्छा तो आप ही पहिले अपना परिचय दीजिये ॥

तेज० । मैं तेजसिंह हूं, बस हुआ ? अब तुम भी अपना परिचय दोगे या नहीं ?

सिपाही०। हां हां अब मैं अपना परिचय दूंगा मगर पहिले एक बात का जवाब दे दीजिये ॥

तेज० । अभी एक आंच की कसर रह गई ! अच्छा पूछिये ॥

सिपाही०। यदि कोई ऐसा आदमी आपके सामने आवे जो आप से मुहब्बत रक्खे, आपके काम में दिलोजान से मदद दे, आपकी भलाई के लिये जान तक देने को तैयार रहे मगर उसका बाप,दादा, चाचा, भाई इत्यादि में से कोई एक आदमी आपके साथ पूरी पूरी दुश्मनी कर चुका हो तो आप उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे ?

तेज०। जो मेरे साथ नेकी करेगा मैं उसके साथ दोस्ती का बर्ताव करूंगा चाहे उसके बाप दादे मेरे साथ पूरी दुश्मनी क्यों न कर चुके हों ॥

सिपाही० । ठीक है ऐसा ही करना चाहिये, अच्छा तो सुनिये मेरा नाम "नानक है और मकान काशीजी ॥

तेज० । नानक !!

सिपाही० । जी हां, मगर मेरा किस्सा अनूठा और आश्चर्य्य-जनक है ॥

तेज० । मैंने यह नाम कभी सुना है मगर याद नहीं पड़ता कि कब और क्यों सुना ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारा हाल आश्चर्य और अद्भुत घटनाओं से भरा होगा, मेरी तबीयत घबड़ा रही है जहां

तक जल्द हो सके अपना ठीक ठाक हाल कहो ॥

नानक०। दिल लगा कर सुनिये मैं कहता हूं, यद्यपि उस काम में देर हो जायगी जिसके लिये मैं आया हूं तथापि मेरा किस्सा सुन कर आप अपना काम बहुत आसानी से निकाल सकेंगे और यहां की बहुत सी बातें आपको मालूम हो जायँगी ॥

नानक का क़िस्सा :—

लड़कपन में बड़े चैन से गुजरती थी, मेरे घर में किसी चीज की कमी न थी, खाने के लिये अच्छी अच्छी चीजें, पहिरने के लिये एक से एक बढ़ के कपड़े और वे सब चीजें मुझे मिला करतीं जिनकी मुझे जरूरत होती या जिनके लिये मैं जिद्द किया करता। मां से मुझे बहुत ज्यादे मुहब्बत थी और बाप से कम क्योंकि मेरा बाप किसी दूसरे शहर में किसी राजा के यहां नौकर था, चौथे पांचवें महीने और कभी कभी साल भर पीछे घर में आता और दस पांच दिन रह कर चला जाता था, उसका पूरा हाल आगे चल कर आपको मालूम होगा। मेरा बाप मेरी मां को बहुत चाहता था और जब वह घर पर आता तो बहुत सा रुपया और अच्छी अच्छी चीजें दे जाया करता था और इस लिये हम लोग अमीरी ठाठ के साथ अपना दिन बिताते थे ॥

जिस बुड्ढी दाई की गोद में मैं खेला करता था वह बहुत ही नेक थी, उसकी बहिन एक जमींदार के यहां जिसका घर मेरे पड़ोस में में था रहती और उसकी लड़की को ले कर जिसके खेलाने पर वह नौकर थी मेरे घर आ बैठा करती, इसलिये मेरा और उस लड़की का रोज साथ रहता और धीरे २ हम दोनों में मुहब्बत होगई और वह मुहब्बत दिन दिन बढ़ने लगी। उस लड़की का नाम जो मुझसे

उम्र में दो वर्ष कम थी रामभोली था और मेरा नाम नानक, मगर घर वाले मुझे ननकू कह के पुकारा करते। वह लड़की बहुतही खूबसूरत थी मगर जनम की गूंगी बहरी थी तथापि हम दोनों की मुहब्बत का यह हाल था कि उसे देखे बिना मुझे और मुझको देखे बिना उसे चैन न पड़ता, गुरू के पास बैठ कर पढ़ना मुझे बहुत बुरा मालूम होता और उस लड़की से मिलने के लिये तरह तरह के बहाने करने पड़ते॥

जब मेरी उम्र दस वर्ष की हुई तो मैं अपने पराये को अच्छी तरह समझने लगा। मेरे पिता का नाम रघुबरसिंह था बहुत दिन पर उसका घर आया करना मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ और मैं अपनी मां से उसका हाल खोद खोद के पूछने लगा, मालूम हुआ कि वह अपना हाल बहुत छिपाता है यहां तक कि मेरी मां भी उसका हाल पूरा पूरा नहीं जानती तथापि यह मालूम होगया कि मेरा बाप ऐयार है और वह किसी राजा के यहां नौकर है, वहां मेरी सौतेली मां भी रहती है जिससे एक लड़की भी है॥

मेरा बाप जब आता तो महीने दो महीने कभी केवल आठ ही दस दिन रह कर चला जाता और जितने दिन रहता मुझे ऐयारी सिखाने में विशेष ध्यान देता, मुझे भी पढ़ने लिखने से ज्यादे खुशी ऐयारी सीखने में होती क्योंकि रामभोली से मिलने तथा अपना मतलब निकालने के लिये ऐयारी बड़ा काम देती थी। धीरे धीरे लड़कपन का जमाना बहुत कुछ निकल गया और अब वह दिन आ गया कि लड़कपन नौजवानी के साथ उधम मचाने लगा और मैं अपने को नौजवान और ऐयार समझने लगा॥

एक रात मैं अपने घर में नीचे के खण्ड में कमरे के अन्दर चारपाई पर लेटा हुआ रामभोली के विषय में तरह तरह की बातें सोच

रहा था। इश्क के चपेटे में नींद हराम हो गई थी, दीवार के साथ लटकती हुई तस्वीरों की तरफ टकटकी बांध कर देख रहा था, यकायक ऊपर की छत पर से धमधमाहट की आवाज आने लगी। मैं यह सोच कर निश्चिन्त हो रहा कि शायद कोई लौंडी किसी जरूरी काम के लिये उठी होगी उसी के पैरों की धमधमाहट मालूम होती है मगर थोड़ी ही देर बाद ऐसा मालूम हुआ कि सीढ़ियों की राह कोई आदमी नीचे उतरा चला आता है, पैर की आवाज भारी थी जिससे साफ मालूम होता था कि यह कोई मर्द है। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि इस समय मर्द इस मकान में कहां से आया। क्योंकि मेरा बाप घर में न था उसे नौकरी पर गये हुए दो महीने से ज्यादे हो चुके थे॥

मैं टोह लेने और कमरे से बाहर निकल कर देखने की नीयत से उठ बैठा, चारपाई की चरचराहट और मेरे उठने की आहट पा कर वह आदमी फुर्ती से उतर कर चौक में आ पहुंचा और जब तक मैं कमरे के बाहर होकर उसे देखूं तब तक वह सदर दर्वाजा खोल कर मकान के बाहर निकल गया, मैं हाथ में खञ्जर लिये हुए मकान के बाहर निकला और उस आदमी को जाते हुए देखा। उस समय मेरे नौकर और सिपाही जो दरवाजे पर रहा करते थे बिल्कुल गाफिल सो रहे थे मगर मैं उन्हें सचेत कर के उस आदमी के पीछे रवाना हुआ॥

मैं नहीं कह सकता कि उस आदमी को जो स्याह कपड़ा ओढ़े मेरे घर से बाहर निकला था यह खबर थी या नहीं कि मैं उसके पीछे २ जा रहा हूं क्योंकि वह बड़ी बेफिक्री से कदम बढ़ाता हुआ मैदान की तरफ जा रहा था॥

थोड़ी दूर जाने बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि वह आदमी अपनी

पीठ पर एक गठड़ी लादे हुए है मगर वह भी एक स्याह कपड़े के अन्दर है। अब मुझे विश्वास होगया कि यह चोर है और इसने मेरे यहां चोरी की है। जी में तो आया कि गुल मचाऊँ जिसमें बहुत से आदमी इकट्ठे हो कर उसे गिरफ़ार कर लें मगर कई बात सोच कर चुप हो रहा और उसके पीछे पीछे जाना ही उचित समझा॥

घण्टे भर तक बराबर मैं उस आदमी के पीछे चला गया यहां तक कि शहर के बाहर मैदान में एक ऐसी जगह पहुंचा जहां इमली के बड़े २ पेड़ इतने ज्यादे लगे हुए थे कि जिनके सबब से मामूली से विशेष अन्धकार हो रहा था। जब उन घने पेड़ों के बीच में पहुंचे तो मालूम हुआ कि यहां लगभग दस आदमी के और भी हैं जो एक समाधि के बगल में बैठे २ बातें कर रहे थे। वह आदमी उसी जगह पहुंचा और उन लोगों में से दो ने बढ़ कर पूछा, "कहो अबकी दफे किसे लाये?" इसके जवाब में उस आदमी ने कहा—"नानक की मां को॥"

आप खयाल कर सकते हैं कि इस शब्द को सुन कर मेरे दिल पर कैसी चोट लगी होगी। अभी तक तो मैं यह जानता था कि वह चोर मेरे यहां से माल असबाब चुराकर लाया है जिसकी मुझे विशेष परवाह न थी और उसका पूरा पूरा हाल जानने की नीयत से चुप-चाप उसके पीछे पीछे चला गया था मगर जब यह मालूम हुआ कि वह कम्बख़्त मेरी मां को चुरा लाया है तो मुझे बड़ाही रञ्ज हुआ और इस बात पर अफसोस करने लगा कि उसे यहां तक आने का मौका व्यर्थ दिया क्योंकि इस समय मेरे किये कुछ भी नहीं हो सकता। चारो तरफ ऐसा सन्नाटा था कि अगर मैं गला फाड़कर चिल्लाता तो भी मेरी आवाज किसी के कान तक न पहुंचती, इसके अतिरिक्त वे लोग गिनती में भी बहुत ज्यादे थे मैं किसी तरह उनका मुकाबला नहीं

कर सकता था, लाचार उस समय बड़ी मुश्किल से मैंने अपने दिल को सम्हाला और चुपचाप एक पेड़ की आड़ में खड़ा रह कर उन लोगों की कार्रवाई देखने और यह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ?

वह समाधि जो औंधी हांड़ी की तरह थी बहुत बड़ी और मजबूत बनी हुई थी। मुझे उसी समय मालूम होगया कि उसके अन्दर जाने के लिये कोई रास्ता है क्योंकि मेरे देखते देखते वे सब के सब उस समाधि के अन्दर घुस गये और जब तब मैं बाहर रहा न निकले॥

घण्टे भर तक राह देख कर मैं उस समाधि के पास गया और उसके चारो तरफ घूम कर अच्छी तरह देखने लगा मगर कोई दरवाजा या छेद ऐसा न दिखाई दिया जिस राह से कोई अन्दर जा सके और न कोई दर्वाजे का निशानही पाया गया। मैं उस समाधि को अच्छी तरह जानता था, उसके बारे में कभी बुरा खयाल किसी के दिल में न हुआ होगा, देहाती लोग मन्नत मानते और प्रायः पूजा करने के लिये आया करते थे परन्तु मुझे आज मालूम हुआ कि यह वास्तव में समाधि नहीं बल्कि खूनियों का अड्डा है !!

मैंने बहुत सर पीटा मगर कुछ काम न निकला लाचार यह सोच कर घर की तरफ लौटा कि पहिले लोगों को इस मामले की खबर करूंगा और इसके बाद कई आदमियों को साथ लाकर इस समाधि को खुदवा कर अपनी मां और बदमाशों का पता लगाऊंगा॥

रात बहुत थोड़ी रह गई थी जब मैं घर पर पहुंचा, मैं चाहता था कि अपनी परेशानी का हाल नौकरों से कहूं मगर वहां तो मामला ही दूसरा था। वह बूढ़ी दाई जिसने मुझे गोद खेलाया था और अब बहुत ही बूढ़ी और कमजोर हो रही थी इस समय दरवाजे पर बैठी नौकरों पर खफा हो रही थी और कह रही थी कि आधी रात के

समय तुमने लड़के को अकेले क्यों जाने दिया? तुम लोगों में से कोई आदमी उसके साथ क्यों न गया? इतने ही में मुझे देख कर नौकर ने कहा, "लो ननकू बाबू आ गये खफा क्यों होती हो॥"

मैंने पास जाकर कहा, "क्या है जो इतना हल्ला मचा रही हो?"

दाई०। है क्या? तुम चुपचाप न जाने कहां चले गये न किसी से कुछ कहा न सुना तुम्हारी मां बेचारी रो रो कर जान दे रही है। ऐसा जाना किस काम का कि एक आदमी भी साथ न ले गये, जाके अपनी मां का हाल तो देखो॥

मैं०। मां कहां है?

दाई०। घर में है और कहां है तुम जाओ तो सही॥

दाई की बात सुन कर मैं बड़ी हैरानी में पड़ गया, वहां उस चोर ऐयार की जुबानी जो कुछ सुना था उससे साफ मालूम होगया कि वह मेरी मां को गिरफ्तार करके ले गया है, मगर घर पहुंच कर सुनते हैं कि मां यहां मौजूद है! खैर मैंने अपने दिल का हाल किसी से न कहा और चुपचाप मकान के अन्दर उस कमरे में पहुंचा जिसमें मेरी मां रहती थी। देखा कि वह चारपाई पर पड़ी हुई रो रही है, उसका सिर फटा हुआ है और उसमें से खून बह रहा है, एक लौंडी हाथ में कपड़ा लिये खून पोंछ रही है, मैंने घबड़ा कर पूछा, "यह क्या मामला है सिर कैसे फट गया?"

मां०। मैंने जब सुना कि तुम घर में नहीं हो तो तुम्हें ढूंढ़ने के लिये घबड़ा कर नीचे उतरी अकस्मात सीढ़ी पर गिर पड़ी। तुम कहां गये थे?

मैं०। इस घर में से एक चोर को कुछ असबाब लेकर बाहर जाते देख मैं उसके पीछे पीछे चला गया था॥

मां०। (कुछ घबड़ा कर) क्या यहां से किसी चोर को बाहर जाते

तुमने देखा था ?

मैं०। हां कह तो चुका कि उसी के पीछे पीछे मैं गया था ॥

मां०। आखिर तुम उसके पीछे पीछे कहां तक गये ? क्या उसका घर देख आये ?

मैं०। नहीं,थोड़ी दूर जाने बाद गलियों में घूम फिर कर न मालूम वह कहां गायब होगया। मैंने बहुत ढूंढ़ा मगर पता न लगा आखिर लाचार हो कर लैाट आया (लैांडी की तरफ देख कर) कुछ मालूम हुआ घर में से क्या क्या चीज चोरी गई ?

लैांडी०। (ताज्जुब में आकर और चारो तरफ देख कर) यहां से तो कोई चीज चोरी नहीं गई ॥

यह जवाब सुन कर मैं चुपचाप नीचे उतर आया और घर में चारों तरफ घूम घूम कर देखने लगा। जिस घर में खजाना रहता था उसमें भी ताला बन्द पाया और कई कीमती चीजें जो मामूली तैार पर भण्डेरियों और खुली आलमारियों में पड़ी रहा करती थीं ज्यों की त्यों मैाजूद पाईं। लाचार मैं अपनी चारपाई पर जाकर लेट रहा और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुपेदी घर में घुस कर कह रही थी कि अब थोड़ी देर में सूर्य्य भगवान निकला ही चाहते हैं ॥

इस बात को कई महीने बीत गये मगर मैंने अपने दिल का हाल और वे बातें जो देखी सुनी थीं किसी न कहीं हां छिपे छिपे तहकी-कात करता रहा कि असल मामला क्या है। चाल चलन बातचीत और मुहब्बत की तरफ ध्यान देने से मुझे निश्चय हो गया कि मेरी मां जो घर में है वह असल में मेरी मां नहीं है बल्कि कोई ऐयारा है। मैं छिपे छिपे अपनी मां की खोज करने लगा और इस विषय पर भी ध्यान देने लगा कि वह ऐयारा मेरे घर में मेरी मां बन कर क्यों

रहती है और उसकी नीयत क्या है? इसके अलावे मैं अपनी जान की हिफाजत भी अच्छी तरह करने लगा। इस बीच में रामभोली ने भी मुझसे मुहब्बत ज्यादे बढ़ा दी। यद्यपि उसकी चाल चलन में भी मुझे फर्क मालूम होता था परन्तु उसकी मुहब्बत ने मुझे अन्धा बना दिया और मैं पूरा पूरा उसका आशिक हो गया॥

एक पढ़ी लिखी बुद्धिमान और नौजवान औरत ने इस बात का ठीका लिया हुआ था कि यद्यपि रामभोली गूंगी और बहरी है परन्तु मैं उसे इशारों ही में समझा बुझा कर पढ़ना लिखना सिखाऊंगी और वास्तव में उस औरत ने बड़ी चालाकी से रामभोली को पढ़ना लिखना सिखा दिया। उसी औरत के हाथ रामभोली की लिखी चीठी मेरे पास आती और मैं भी उसी के हाथ जवाब भेजा करता था। ऊपर कही वारदात के कुछ दिन बाद जो चीठी रामभोली की मेरे पास आने लगी उसके अक्षरों का ढङ्ग और गठन कुछ निराले ही तौर का था परन्तु मैंने उस समय उस पर विशेष ध्यान न दिया॥

अब ऊपर वाले मामले को छः महीने से ज्यादे गुजर गये। इस बीच में मेरा बाप कई दफे घर में आया और थोड़े थोड़े दिन रह कर चला गया। घर की बातों में इतना और फर्क पड़ा कि मेरा बाप मेरी मां से मुहब्बत ज्यादे करने लगा मगर मेरी नकली मां तरह तरह की बेढब फरमाइशों से उसे तङ्ग करने लगी॥

एक दिन जब मेरा बाप घरही में था आधी रात के समय मेरे बाप और मेरी मां में कुछ खटपट हो रही थी, उस समय मैं जागता था, मेरे जी में आया कि किसी तरह इस झगड़े का सबब मालूम करना चाहिये, आखिर ऐसाही किया, मैं चुपके से उठा और धीरे धीरे उस कमरे के पास गया जिसके अन्दर वे दोनों जली कटी बातें कर रहे थे। उस कमरे में तीन दर्वाजे थे जिनमें एक खुला हुआ

मगर उसके आगे पर्दा गिरा हुआ था और दो दर्वाजे बन्द थे । मैं एक बन्द दर्वाजे के (जो खुले दर्वाजे के ठीक दूसरी तरफ था) आगे जाकर लेट रहा और उन दोनों की बातें सुनने लगा । जो कुछ मैंने सुना उसे ठीक ठीक बयान करता हूं ॥

मां० । जब तुम्हें मेरा विश्वास नहीं तो किस मुंह से कहते हो कि मैंने तेरे लिये यह किया और वह किया ?

बाप० । बेशक मैंने तेरे लिये अपनी जान खतरे में डाली और जन्म भर के लिये अपने नाम में धब्बा लगाया, अब तू चाहती है कि मैं न तो मरने लायक रहूं और न जीते रह कर किसी को मुंह दिखा सकूं ॥

मां० । अपने मुंह से तुम जो चाहो कहो मगर मैं ऐसा नहीं चाहती जो तुम कहते हो, क्या मैं वह किताब खा जाऊंगी या किसी दूसरे को देदूंगी ? जाओ तुम अपनी किताब लेजाओ अपनी चहेती बेगम को नजर कर दो ॥

बाप० । मेरी वह जोरू जिसे तुम ताना देकर बेगम कहती हो तुम्हारे ऐसी जिद्दिन नहीं है, उसने मुझे राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां चोरी करने के लिये नहीं कहा और न वह तिलिस्म का तमाशा देखा चाहती है ॥

मां० । उसको इतना दिमाग ही नहीं है, कङ्गाल की लड़की का हौसला ही कितना ॥

बाप० । हां बेशक उसका इतना बड़ा हौसला नहीं है कि मेरी जान की ग्राहक बन बैठे ॥

इसके बाद थोड़ी सी बातें बहुत हो धीरे धीरे हुई जिसे मैं अच्छी तरह सुन न सका अन्त में मेरा बाप इतना कह कर चुप हो रहा, "खैर जो बदा है वह भोगूंहींगा लो यह खूनी किताब तुम्हारे हवाले करता

हूं पांच चार रोज में लौट के आऊंगा तो तिलिस्म का तमाशा दिखा दूंगा और फिर यह किताब राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां किसी ढब से पहुंचा दूंगा ॥"

मैं यह सोच कर कि अब मेरा बाप बाहर निकला ही चाहता है उस खड़ा हुआ और चुपचाप नीचे उतर कर अपने कमरे में चला आया मगर मेरे दिल की अजब हालत थी। मैं खूब जानता था कि वह मेरी मां नहीं है और यह भी मालूम हो गया कि उस कम्बख़्त के फेर में पड़ कर मेरा बाप अपने ऊपर कोई आफत लाया ही चाहता है इस लिये यह सोचने लगा कि किसी तरह अपने बाप को इसके फरेब से बचाना और अपनी असल मां का पता लगाना चाहिये ॥

दो घण्टे बीत गये मेरा बाप नीचे न उतरा, मेरी चिन्ता और भी बढ़ गई, मैं सोचने लगा कि शायद फिर कुछ खटपट होने लगी आखिर मुझसे रहा न गया मैंने अपने कमरे से बाहर निकल बाप को आवाज दी, आवाज सुनते ही वे मेरे पास चले आये और धीरे से बोले, "क्यों बेटा क्या है ॥"

मैं०। आप से एक बात कहा चाहता हूं मगर बहुत छिपा कर ॥

बाप०। कहो यहां तो कोई भी सुनने वाला नहीं है ऐसा ही डर हो तो ऊपर चले चलो ॥

मैं०। (धीरे से) नहीं, उस दुष्टा के सामने कुछ कहा नहीं चाहता जिसे आप मेरी मां समझते हैं ॥

बाप०। (ताज्जुब में आकर) क्या वह तुम्हारी मां नहीं है ?

मैं०। नहीं ॥

बाप०। आज क्या है जो तुम ऐसी बात करते हो ? क्या उसने तुम्हें कुछ तकलीफ दी है ॥

मैं०। आप इस जगह मुझसे कुछ भी न पूछिये निराले में जब

मेरी बातें सुनियेगा तो असल भेद मालूम हो जायगा ॥

इतना सुनते ही मेरे बाप ने घबड़ा कर मेरा हाथ पकड़ लिया और मकान के बाहर अपने खास बैठके में लेजा कर दर्वाजा बन्द करने के बाद पूछा, कहो क्या बात है ? मैंने वे कुल बातें जो देखी सुनी थीं और जो ऊपर बयान कर चुका हूं कह सुनाईं जिसके सुनते ही मेरे बाप की अजब हालत हो गई, चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की निशानी मालूम होने लगी, थोड़ी देर तक चुप रहने और कुछ गौर करने के बाद बोले, "बेशक धोखा दिया ! अब जो गौर करता हूं तो इस कम्बख़्त की बातचीत और चालचलन में बेशक बहुत कुछ फर्क पाता हूं मगर अफसोस ! तुमने इतने दिनों तक न मालूम क्या समझ कर यह बात छिपा रक्खी और अपनी मां की तरफ से भी गाफिल रहे न जाने वह बेचारी जीती है या इस दुनिया से उठ गई ॥

मैं० । जरासा गौर करने पर आप खुद समझ सकते हैं कि इस बात को इतने दिनों तक मैं क्यों छिपाये रहा । मां की तरफ से भी मैं गाफिल न रहा जहां तक हो सका पता लगाने के लिये परेशान हुआ मगर अभी तक कोई नतीजा अच्छा न निकला । तथापि मुझे विश्वास है कि वह इस दुनिया में जीती जागती मौजूद है ॥

बाप० । तुम्हारा खयाल ठीक है, इसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या होगा कि एक ऐयारा उसकी सूरत बन कर अपना काम निकाला चाहती है और इस घर में अभी तक मौजूद है जब तक इसका काम न निकलेगा बेशक उसकी जान बची रहेगी । अफसोस मैंने बड़ा धोखा खाया और अपने को किसी लायक न रक्खा ! अच्छा यह कहो कि इस समय तुम्हें क्या सूझी जो यह सब कहने के लिये तैयार हो गये ?

मैं० । खुटका तो बहुत दिनों से लगा ही था मगर इस समय

कुछ तकरार की आहट पाकर मैं ऊपर चढ़ गया और बड़ी देर तक आप लोगों की बात सुनता रहा, ज्यादे तो कुछ समझ में न आया मगर इतना मालूम होगया कि आप उसकी खातिर से राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां से कोई किताब चुरा लाये हैं और अब कोई काम ऐसा किया चाहते हैं जो आपके लिये बहुत बुरा नतीजा पैदा करेगा अस्तु ऐसे समय में चुप रहना मैंने उचित न जाना। अब आप कृपा करके यह कहिये कि वह किताब जो आप चुरा लाये हैं कैसी है ?

बाप०। इस समय खुलासा हाल कहने का मौका तो नहीं परन्तु संक्षेप में कह तुम्हें होशियार कर देना भी बहुत जरूरी है, क्योंकि अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं, अगर यह औरत तुम्हारी मां होती तो कोई हर्ज न था। वह एक प्राचीन समय की किसी के खून से लिखी हुई किताब है जो राजा बीरेन्द्रसिंह को बिक्रमी तिलिस्म से मिली थी। उस तिलिस्म में स्याह पत्थर के दालान में एक सिंहासन के ऊपर छोटा सा पत्थर का सन्दूक था जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था॥

मैं०। हां हां, यह किस्सा आप पहिले मुझसे कह चुके हैं बल्कि आपने यह भी कहा था कि सिंहासन के ऊपर जो पत्थर था और जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था वह वास्तव में एक सन्दूक था और उसके अन्दर से कोई नायाब चीज राजा बीरेन्द्रसिंह को मिली थी॥

बाप०। ठीक है, इस समय मेरी अक्ल ठिकाने नहीं इसी से बहुत सी बातें भूल रहा हूं, हां तो उसी पत्थर के टुकड़े में से जिसे छोटा सन्दूक कहना चाहिये यह किताब और हीरे का एक सरपेच निकला था॥

मैं०। उस किताब में क्या बात है ?

बाप० । उस किताब में उस तिलिस्म के भेद लिखे हुए हैं जो राजा बीरेन्द्रसिंह के हाथ से न टूट सका और जिसके विषय में मशहूर है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के उस तिलिस्म को तोड़ेंगे ॥

मैं० । यदि उस पुस्तक में उस भारी तिलिस्म के भेद लिखे हुए थे तो राजा बीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म को क्यों छोड़ दिया ?

बाप० । केवल उस किताब की सहायता से तिलिस्म टूट नहीं सकता, हां जिसके पास वह पुस्तक हो उसे तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हो सकता है और यदि वह चाहे तो तिलिस्म में जाकर वहां की सैर कर सकता है । इस कम्बख़्त औरत ने यही कहा कि मुझे तिलिस्म की सैर करा दो उसी की ज़िद्द ने मुझसे यह अपराध कराया, लाचार मैंने सोच लिया था कि इसकी इच्छा पूरी करने बाद मैं वह पुस्तक जहां की तहां रख आऊँगा, मगर जब यह औरत कोई दूसरी ही है तो बेशक मुझे धोखा दिया गया और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह औरत उस तिलिस्म से कोई सम्बन्ध रखती है, यदि ऐसा है तो उस पुस्तक का मिलना मुश्किल है । अफसोस ! जब मैं किताब चुरा कर राजा बीरेन्द्रसिंह के सीसमहल से बाहर निकल रहा था तो उनके एक ऐयार ने मुझे देख लिया । मैं मुश्किल से निकल भागा और यह सोचे हुए था कि यदि मैं यह पुस्तक यहां रख जाऊंगा तो फिर मेरी खोज न होगी, मगर हाय ! यहां तो कोई दूसराही रङ्ग निकला ॥

मैं० । आपने उस पुस्तक को पढ़ा भी था ?

बाप० । (आंखों में आंसू भर कर) केवल उसका पहिला पृष्ठ देख सका जिसमें इतना ही लिखा था कि जिसके कब्जे में यह पुस्तक रहेगी उसे तिलिस्मी आदमियों के हाथ से दुःख नहीं पहुंच सकता । जो हो परन्तु अब इन सब बातों का समय नहीं है यदि हो सके तो उस औरत के हाथ से किताब ले लेना चाहिये, उठो मेरे साथ चलो ॥

इतना कह कर मेरा बाप उठा और मकान के अन्दर चला, मैं भी उसके पीछे २ था। अन्दर से मकान का दर्वाजा बन्द कर लिया गया मगर जब मेरा बाप ऊपर के कमरे में जाने लगा जहां मेरी मां रहा करती थी तो मुझे सीढ़ी के नीचे खड़ा कर गया और कह गया कि देखो जब मैं पुकारूंगा तो तुरत चले आना॥

घण्टे भर तक मैं खड़ा रहा इसके बाद छतपर धमधमाहट मालूम होने लगी मानो कई आदमी आपुस में लड़ रहे हैं। अब मुझसे रहा न गया, हाथ में खञ्जर ले कर मैं ऊपर चढ गया और बेधड़क उस कमरे में घुस गया जिसमें मेरा बाप था, इस समय धमधमाहट की आवाज बन्द हो गई थी और कमरे के अन्दर सन्नाटा था। भीतर की अवस्था देख कर मैं घबड़ा गया। वह औरत जो मेरी मां बनी हुई थी वहां न थी, मेरा बाप जमीन पर पड़ा हुआ था और उसके बदन से खून बह रहा था। मैं घबड़ाकर उसके पास गया और देखा कि वह बेहोश पड़ा है और उसके सर और बाएँ हाथ में तलवार की गहरी चोट लगी हुई है जिसमें से अभी तक खून निकल रहा है। मैंने अपनी धोती फाड़ी और पानी से जख्म धो कर बांधने बाद अपने बाप को होश में लाने की फिक्र करने लगा, थोड़ी देर बाद वह होश में आया और उठ बैठा॥

मैं०। मुझे ताज्जुब है कि एक औरत के हाथ से आप चोट खा गये!!

बाप०। केवल औरत ही न थी यहां आने पर मैंने कई आदमी देखे जिनके सबब से यह नौबत आ पहुंची, अफसोस! वह किताब हाथ न लगी और मेरी जिन्दगी मुफ्त में बर्बाद हुई!!

मैं०। ताज्जुब है कि इस मकान में लोग किस राह से आ कर अपना काम कर जाते हैं! पहिले भी कई दफे यह बात देखने में आई!!

बाप०। खैर जो हुआ सो हुआ अब मैं जाता हूं,गुमनाम रह कर अपने किये का फल भोगूंगा, यदि वह किताब हाथ लग गई और मैं अपने माथे से बदनामी का टीका मिटा सका तो फिर तुमसे मिलूंगा नहीं तो हरिइच्छा। तुम इस मकान को मत छोड़ना और जो कुछ देख सुन चुके हो उसका पता लगाना। तुम्हारे इस घर में जो कुछ दौलत है उसे हिफाजत से रखना और बड़ी होशियारी से रह कर गुजारा करना और बन पड़े तो अपनी मां का पता भी लगाना॥

बाप की बातें सुन कर मेरी अजब हालत हो गई, दिल धड़कने लगा,गला भर आया,आंसुओं ने आंखों के आगे परदा डाल दिया। मैं बहुत कुछ कहा चाहता था मगर न कह सका,मेरे बाप ने देखते २ मकान से बाहर निकल कर न मालूम किधर का रास्ता लिया। उस समय मेरे हिसाब दुनिया उजड़ गई थी और मैं बिना मां बाप के मुरदे से भी बदतर हो रहा था। मेरे घर में जो कुछ उपद्रव हो चुका उसका कुछ हाल नौकरों और लौंडियों को मालूम हो चुका था मगर मेरे समझाने से उन लोगों ने छिपा लिया और बड़ी कठिनाई से मैं उस मकान में रहने और बीती हुई बातों का पता लगाने लगा॥

प्रति दिन आधी रात के समय मैं ऐयारी के सामान से दुरुस्त हो कर उस समाधि के पास जाया करता जहां पहिले दिन उस आदमी के पीछे पीछे गया था जो मेरी मां को चुरा ले गया था। अब यहां से मैं अपने किस्से को बहुत ही संक्षेप में कहा चाहता हूं क्योंकि समय बहुत कम है॥

एक दिन आधी रात के समय उसी समाधि के पास एक इमली के पेड़ पर चढ़ कर मैं बैठा हुआ था और अपनी बदकिस्मती पर रो रहा था इतने ही में उस समाधि के अन्दर से एक आदमी निकला

और पूरब की तरफ रवाना हुआ। मैं झटपट पेड़ से उतरा और पैर दबाता हुआ उसके पीछे जा रहा था इसलिये उसे मेरे आने की आहट कुछ भी मालूम न हुई। उस आदमी के हाथ में एक लिफाफा कपड़े का था। उस लिफाफे की सूरत ठीक उस खलीते की तरह थी जैसा प्रायः राजे और बड़े २ जमींदार लोग राजों महाराजों के यहां चीठी भेजती समय लिफाफे की जगह काम में लाते हैं। यकायक मेरे जी में आया कि किसी तरह यह लिफाफा इसके हाथ से ले लेना चाहिये इससे मेरा मतलब कुछ न कुछ जरूर निकलेगा॥

वह लिफाफा अँधेरी रात के सबब मुझे दिखाई न देता मगर राह चलते चलते वह एक ऐसी दूकान के पास से हो कर निकला जो बांस की जाफरीदार टट्टी से बन्द थी मगर भीतर जलते हुए चिराग की रोशनी बाहर सड़क पर और आगे से जाने वाले के ऊपर बखूबी पड़ती थी। उसी रोशनी ने मुझे दिखा दिया था कि इसके हाथ में एक लिफाफा या खलीता मौजूद है। मैंने उसके हाथ से किसी तरह लिफाफा लेलेने के बारे में अपनी राय पक्की करली और कदम बढ़ा कर उसके पास पहुंचा। मैंने उसे धोखे में इस जोर से एक धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हाल न सका और मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा, लिफाफा उसके हाथ से छटक कर दूर जा रहा जिसे मैंने फुरती से उठा लिया और वहां से भागा। जहां तक हो सका मैंने भागने में तेजी की, मुझे मालूम हुआ कि वह आदमी उठ कर मुझे पकड़ने के लिये दौड़ा मगर मुझे न पा सका, गलियों में घूमता और दौड़ता हुआ मैं अपने घर पहुंचा और दर्वाजे पर खड़ा हो कर दम लेने लगा। उस समय मेरे दरवाजे पर रामधनीसिंह नामी मेरा एक सिपाही पहरा दे रहा था। यह सिपाही नाटे कद का बहुत ही मज-बूत और चालाक था, थोड़े दिन से चौकीदारी के काम पर मेरे बाप

ने उसे नौकर रक्खा था ॥

मुझे उम्मीद थी कि रामधनीसिंह दौड़ते हुए आने का कारण मुझसे पूछेगा मगर उसने कुछ भी न पूछा। दर्वाजा खुलवा कर मैं मकान के अन्दर गया और फिर दर्वाजा बन्द करके अपने कमरे में पहुंचा। शमादान अभी तक जल रहा था। उस लिफाफे को खोलने के लिये मेरा जी बेचैन हो रहा था आखिर शमादान के पास जाकर लिफाफे को खोला, उस लिफाफे में एक चीठी और लोहे की एक ताली थी, यह ताली बिचित्र ढङ्ग की थी, उसमें छोटे छोटे कई छेद और पत्तियां बनी हुई थीं। ताली जेब में रख लेने बाद मैं चीठी पढ़ने लगा। यह लिखा हुआ था:—

श्री १०८ मनोरमाजी की सेवा में,

महीनों की मेहनत आज सुफल हुई। जिस काम पर आपने मुझे तैनात किया था वह ईश्वर की कृपा से पूरा हुआ। "रिक्तगन्थ" मेरे हाथ लगा। आपने लिखा था कि "हारीत* सप्ताह में मैं रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने में रहूंगी इस बीच में यदि रिक्तगन्थ (खून से लिखी हुई किताब) मिल जाय तो उसी तहखाने के बलिमण्डप में मुझसे मिल कर मुझे देना।" आज्ञानुसार मैं रोहतासगढ़ के तहखाने में गया परन्तु आप न मिले। वहां से रिक्तगन्थ ले कर लौटने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि तेजसिंह की गुप्त अमलदारी तहखाने में हो चुकी थी उनके साथी ऐयार लोग चारो तरफ ऊधम मचा रहे थे। मैंने यह सोचकर कि यहां से निकलती समय शायद किसी ऐयार के पाले पड़ जाऊं और यह रिक्तगन्थ छिन जाय तो मुश्किल होगी, रिक्तगन्थ को चौबीस नम्बर की कोठड़ी में जिसकी

* ऐयारी भाषा में "हरित" देवी पूजा को कहते हैं ॥

ताली आपने मुझे दे रक्खा था, रख कर खाली हाथ बाहर निकल आया। ईश्वर की कृपा से किसी ऐयार से मुलाकात न हुई परन्तु दस्त की बीमारी ने मुझे बेकाम कर दिया मैं आपके पास आने लायक न रहा, लाचार अपने एक दोस्त के हाथ जिससे अचानक मुलाकात हो गई यह ताली आपके पास भेजता हूं। मुझे उम्मीद है कि वह आदमी चौबीस नम्बर की कोठड़ी को कदापि नहीं खोल सकता जिसके पास यह ताली न हो, अस्तु अब आपको जब समय मिले रिक्तगन्थ मँगवा लीजियेगा और बाकी हाल पत्र ले जाने वाले के मुंह से सुनियेगा मुझमें अब कुछ लिखने की ताकत नहीं, बस अब साधोराम को इस दुनिया में रहने की आशा नहीं, अब साधोराम आपके चरणों को नहीं देख सकता। यदि आराम हुआ तो यह पत्र स्वयम् लेकर पटने से होता हुआ सेवा में उपस्थित होऊंगा यदि ऐसा न हुआ तो समझ लीजियेगा कि साधोराम नहीं रहा, इस पत्र के पाते ही नानक की मां को मिपटा दीजियेगा॥

आपका दासः-- साधोराम॥

इस चीठी के पढ़ते ही मेरे दिल की मुरझाई हुई कली खिल गई, निश्चय हो गया कि मेरी मां अभी जीती है, यदि यह चीठी ठिकाने पहुंच जाती तो उस बेचारी का बचना मुश्किल था। अब मैं यह सोचने लगा कि जिसके हाथ से यह चीठी मैंने ली है वह साधो-राम था या उसका कोई मित्र? परन्तु मेरी बिचारशक्ति ने तुरतही उत्तर दिया कि नहीं वह साधोराम नहीं था यदि वह होता तो अपने लिखे अनुसार उस सड़क से आता जो पटने की तरफ से आती है। साधोराम के मरने का दूसरा सबूत यह भी है कि यह चीठी और ताली काले खलीते (कपड़े का लिफाफा) के अन्दर है॥

चीठी के ऊपर मनोरमा का नाम लिखा था, इससे निश्चय हो

गया कि यह बिल्कुल बखेड़ा मनोरमा ही का मचाया हुआ है, मैं मनोरमा को अच्छी तरह जानता था, तृलोचनेश्वर महादेव के पास उसका आलीशान मकान देखनेही से मालूम होता है कि यह किसी राजे की लड़की होगी मगर ऐसा नहीं है, हां उसका खर्च हद्द से ज्यादे बढ़ा हुआ है मगर आमदनी का ठिकाना कुछ मालूम नहीं होता। दूसरी बात यह है कि वह प्रचलित रीति पर ध्यान न दे कर बेपर्द खुले मैदान पालकी, तामदान और कभी कभी घोड़े पर सवार हो कर बड़े ठाठ से घूमा करती है और इस लिये काशी के छोटे बड़े सभी मनुष्य उसे पहिचानते हैं। उस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि मनोरमा तिलिस्म से कुछ सम्बन्ध रखती है और मेरी मां भी उसी के कब्जे में है॥

इस सोच विचार में कि किसी तरह अपनी मां को छुड़ाना और रिक्तगन्थ पर कब्जा करना चाहिये कई दिन गुजर गये और इस बीच में उस ताली को मैं अपने मकान के बाहर किसी दूसरे ठिकाने हिफाजत से रख आया॥

यहां तक अपना हाल कह कर नानक चुप हो रहा और झुक कर बाहर की तरफ देखने लगा॥

तेज०। हां हां, कहो फिर क्या हुआ? तुम्हारा हाल बड़ाही दिलचस्प है, बिलकुल बातें हमारे ही सम्बन्ध की हैं॥

नानक०। ठीक है परन्तु अफसोस! इस समय मैं जो कुछ आप से कह रहा हूं उससे मेरे बाप का कसूर और......

तेज०। मैं समझ गया जो कुछ तुम कहा चाहते हो मगर मैं सच्चे दिल से कहता हूं कि यद्यपि तुम्हारे बाप ने भारी जुर्म किया है और उसके विषय में हमारी तरफ से बिज्ञापन दिया गया है कि जो कोई रिक्तगन्थ के चोर को गिरफ्तार करेगा उसे मुंह मांगा इनाम दिया

जायगा तथापि तुम्हारे इस किस्से को सुन कर जिसे तुम सचाई के साथ कह रहे हो मैं वादा करता हूं कि उसका कसूर माफ किया जायगा और तुम जो कुछ नेकी हमारे साथ किया चाहते हो या करोगे उसके लिये धन्यवाद के साथ पूरा २ इनाम दिया जायगा। मैं समझता हूं कि तुम्हें अपना किस्सा अभी बहुत कहना है और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि जो कुछ तुम कहोगे सब मेरे मतलब की बात होगी परन्तु इस बात का जवाब मैं सबके पहिले सुना चाहता हूं कि वह रिक्तगन्थ अब तुम्हारे कब्जे में है या नहीं ? अथवा हम लोग उसके पाने की आशा कर सकते हैं या नहीं ?

इसके पहिले कि तेजसिंह की आखिरी बात का कुछ जवाब नानक दे, बाहर से यह आवाज आई, "यद्यपि रिक्तगन्थ नानक के कब्जे में अब नहीं है तथापि तुम उसे उस अवस्था में पा सकते हो जब अपने को उसके पाने योग्य साबित करो।" इसके बाद खिलखिला कर हँसने की आवाज आई॥

इस आवाज ने दोनोंही को परेशान कर दिया, दोनोंही को दुश्मन का शक हुआ। नानक ने सोचा कि शायद मायारानी का कोई ऐयार आ गया और उसने छिप कर मेरा किस्सा सुन लिया अब यहां से निकलना या जान बचा कर भागना बहुत मुश्किल है। तेजसिंह को भी यह निश्चय हो गया कि नानक द्वारा जो कुछ भलाई की आशा हुई थी वह अब निराशा के साथ बदल गई॥

दोनों ऐयार उसे ढूंढ़ने के लिये उठे जिसकी आवाज ने यकायक उन दोनों को चौंका और होशियार कर दिया था, दो कदम भी आगे न बढ़े थे कि फिर आवाज आई, "क्यों कष्ट करते हो मैं स्वयम् तुम्हारे पास आता हूं।" साथही इसके एक आदमी इन दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा। जब वह पास पहुंचा तो बोला, "ऐ तेजसिंह और

नानक ! तुम दोनों मुझे अच्छी तरह देख और पहिचान लो, मैं तुमसे कई दफे मिलूंगा देखो भूलना मत ॥"

तेजसिंह और नानक ने उस आदमी को अच्छी तरह देखा, उस का कद नाटा और रङ्ग सांवला था। घनी और स्याह दाढ़ी और मूछों ने उसका आधा चेहरा छिपा रक्खा था, उसकी आंखें बड़ी २ मगर बहुत ही सुर्ख और चमकीली थीं, हाथ पैर से मजबूत और फुरतीला मालूम पड़ता था, माथे पर सुपेद चार अंगुल जगह घेरे हुए रामानन्दी तिलक था जिस पर देखने वाले की निगाह सबसे पहिले पड़ सकती थी, ऐसी अवस्था होने पर भी उसका चेहरा नमकीन और खूबसूरत था, देखने वाले का दिल उसकी तरफ खिंच जाना कोई ताज्जुब न था। उसकी पोशाक भी बेशकीमत और चुस्त मगर कुछ कुछ भूंडी थी, स्याह पायजामा, सुर्ख अङ्गा जिसमें बड़े बड़े कई जेब किसी चीज से भरे हुए थे और सब्ज रङ्ग के मुड़ासे की तरफ ध्यान देने से हँसी आती थी, एक खञ्जर कमर में और दूसरा खञ्जर हाथ में लिये हुए था ॥

तेजसिंह ने बड़े गौर से उसे देखा और पूछा, "क्या तुम अपना नाम बता सकते हो ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "नहीं, मगर चण्डूल के नाम से आप मुझे बुला सकते हैं ॥"

तेज०। जहां तक मैं समझता हूं आप इस नाम के योग्य नहीं हैं॥

चण्डूल०। चाहे न हों॥

तेज०। खैर यह भी कह सकते हो कि तुम्हारा आना यहां क्यों हुआ ?

चण्डूल०। इसलिये कि तुम दोनों को होशियार कर दूं कि कल शाम के वक्त आठ आदमियों के खून से इस बाग की क्यारियां रङ्गी जायँगी जो इस बाग में फँस कर आ चुके हैं॥

तेज०। क्या उनके नाम भी बता सकते है॥

चण्डूल०। हां सुनो—राजा बीरेन्द्रसिंह एक, चन्द्रकान्ता दो, इन्द्रजीतसिंह तीन, आनन्दसिंह चार, किशोरी पांच, कामिनी छः, तेजसिंह सात, नानक आठ॥

तेज०। (घबड़ा कर) यह तो मैं जानता हूं कि दोनों कुमार और उनके ऐयार मायारानी के फन्दे में फँस कर यहां आ चुके हैं मगर राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता तो......

चण्डूल०। हां हां, वे दोनों भी फँस कर यहां आ चुके हैं पूछो नानक से॥

नानक०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) हां ठीक है, अपना किस्सा कहने के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल मैं आपसे कहने ही वाला था, मुझे अच्छी तरह मालूम नहीं है कि वे लोग क्योंकर मायारानी के फन्दे में फँसे!!

चण्डूल०। (नानक से) अब विशेष बात का मौका नहीं है तेजसिंह से जो कुछ करते बनेगा कर लेंगे मैं इस समय केवल तुम्हारे लिये आया हूं आओ और मेरे साथ चलो॥

नानक०। मैं तुम पर विश्वास कर तुम्हारे साथ क्योंकर चल सकता हूं?

चण्डूल०। (कड़ी निगाह से नानक की तरफ देख के और हुकूमत के साथ) लुच्चा कहीं का! अच्छा सुन एक बात मैं तेरे कान में कहा चाहता हूं॥

इतना कह कर चण्डूल चार पांच कदम पीछे हट गया, उसकी डपट और बात ने नानक के दिल पर कुछ ऐसा असर किया कि वह अपने को उसके पास जाने से रोक न सका। नानक चण्डूल के पास गया मगर अपने को हर तरह सम्हाले और अपना दाहिना हाथ खञ्जर

के कब्जे पर रक्खे हुए था। चण्डूल ने झुक कर नानक के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही नानक दो कदम पीछे हट गया और बड़े गौर से उसकी सूरत देखने लगा। थोड़ी देर तक यही अवस्था रही इसके बाद नानक ने तेजसिंह की तरफ देखा और कहा, "माफ कीजियेगा, लाचार होकर मुझे इनके साथ जानाही पड़ा! अब मैं बिलकुल इनके कब्जे में हूं यहां तक कि मेरी जान भी इनके हाथ में है।" इस के बाद नानक ने कुछ न कहा और वह चण्डूल के साथ साथ चला गया और पेड़ों की आड़ में घूम फिर कर देखते २ नजरों से गायब हो गया॥

अब तेजसिंह अकेले पड़ गये, तरह तरह के खयालों ने चारों तरफ से आकर घेर लिया। नानक की जुबानी जो कुछ उन्होंने सुना था उससे बहुत सी भेद की बातें मालूम हुई थीं और अभी बहुत कुछ मालूम होने की आशा थी परन्तु नानक अपना किस्सा पूरा करने भी न पाया था कि इस चण्डूल ने आ कर और ही रङ्ग मचा दिया इससे तरद्दुद और घबराहट पहिले से सौगुनी ज्यादे बढ़ गई॥

नानक की बातों से विश्वास होता है कि उसने अपना हाल जो कुछ कहा सच्चा है मगर उसके किस्से में कोई ऐसा पात्र नहीं आया जिसके बारे में चण्डूल होने का अनुमान किया जाय, फिर यह चण्डूल कौन है जिसकी थोड़ीसी बात से जो उसने झुककर नानक के कान में कही थी नानक घबड़ा गया और उसके साथ जाने पर उसे मजबूर होना पड़ा। हाय! यह कैसी भयानक खबर सुनने में आई कि अब शीघ्र ही राजा बीरेन्द्रसिंह, चन्द्रकान्ता तथा दोनों कुमार और ऐयार लोग इस बाग में मारे जायंगे! बेचारे राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता के बारे में भी अब ऐसी बातें!......ओफ!!...... न मालूम अब ईश्वर क्या किया चाहता है! मगर हिम्मत न हारनी

चाहिये आदमी की हिम्मत और बुद्धि की जांच ऐसी ही अवस्था में होती है,ऐयारी का बटुआ और खञ्जर भी मेरे पास मैाजूद है कोई न कोई उद्योग अवश्य करना चाहिये वह भी जहां तक शीघ्रता के साथ हो सके। इन सब बिचारों और गम्भीर चिन्ता में तेजसिंह डूबे हुए थे और सोच रहे थे कि अब क्या करना उचित है? इतने ही में सामने से आती हुई मायारानी दिखाई पड़ी। इस समय वह असली बिहारी-सिंह (जिसकी सूरत तेजसिंह ने बदल दी थी और अभी तक वह उस सूरत में थे) और हरनामसिंह तथा और भी कई ऐयारों और लौंडियों से घिरी हुई थी। सवेरा अच्छी तरह हो चुका था और सूर्य्य की लालिमा ऊँचे ऊँचे पेड़ों की डालियों पर फैल चुकी थी॥

मायारानी तेजसिंह के पास आई और असली बिहारीसिंह ने आगे बढ़ कर तेजसिंह से कहा, "धर्मावतार बिहारीसिंहजी! मिजाज दुरुस्त है? या अभी तक आप पागल ही हैं?"

तेज०। अब मुझे बिहारीसिंह कह कर पुकारने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि आप जान ही गये हैं कि यह पागल असल में बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार है और अब आपको यह जान कर हद्द दर्जे की खुशी होगी कि पागल बिहारीसिंह वास्तव में ऐयारों का गुरू घण्टाल तेजसिंह है जिसकी बढ़ी हुई हिम्मतों का मुकाबला करने वाला इस समय दुनिया में कोई नहीं है और जो इस कैद की अवस्था में भी अपनी हिम्मत और बहादुरी का दावा करके बहुत कुछ कर गुजरने की नीयत रखता है॥

बिहारी०। ठीक है मगर अब आप ऐयारों के गुरू घण्टाल की पदवी नहीं रख सकते क्योंकि आपकी अनमोल ऐयारी यहां मिट्टी मिल गई और अब शीघ्र ही हथकड़ी बेड़ी भी आपके नजर की जायगी॥

तेज०। अगर तुम मेरी ऐयारी चौपट कर चुके थे तो ऐयारी का बटुआ और खञ्जर भी ले लिये होते । यह गुरू घण्टाल ही का काम है कि पागल होने पर भी ऐयारी का बटुआ और खञ्जर किसी के हाथ में न जाने दिया बाकी रहा बेड़ी सो मेरा चरन कोई छू नहीं सकता जब तक हाथ में खञ्जर मौजूद है (हाथ में खञ्जर लेकर और दिखा कर) वह कौन सा हाथ है जो हथकड़ी ले कर इसके सामने आने को हिम्मत रखता है ?

बिहारी०। मालूम होता है कि इस समय तुम्हारी आंखें केवल मुझी को देख रही हैं उन लोगों को नहीं देखतीं जो मेरे साथ हैं, अतएव सिद्ध हो गया कि तुम पागल होने के साथ ही साथ अन्धे भी हो गये, नहीं तो......

बिहारीसिंह की बात पूरी भी न हुई थी कि बगल की एक कोठड़ी का दर्वाजा खुला और वही चण्डूल फुर्ती के साथ निकल कर सभों के बीच में आ खड़ा हुआ जिसे देखते ही मायारानी और उसके साथियों की हैरानी का कोई ठिकाना न रहा। केवल इतनाही नहीं बल्कि यह भी मालूम हुआ कि उस कोठड़ी में और भी कई आदमी हैं जिसके अन्दर से चण्डूल निकला था क्योंकि उस कोठड़ी का दरवाजा चंडूलने खुलाही छोड़ दिया था और उसके अन्दर के आदमी कुछ कुछ दिखाई पड़ते थे ॥

चण्डूल०। (मायारानी और उसके साथियों की तरफ देख कर) यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि मैं कौन हूं, हां अपने आने का सबब जरूर कहूंगा। मुझे एक लौंडी और एक गुलाम की जरूरत है, कहो तुम लोगों में से किसे चुनूं (मायारानी की तरफ इशारा कर के) मैं समझता हूं कि इसी को अपनी लौंडी बनाऊं और (बिहारी की तरफ इशारा करके) इसे गुलाम की पदवी दूं ॥

बिहारी०। तू कौन है जो इस बेअदबी के साथ बातें करता है (मायारानी की तरफ इशारा करके)तू जानता नहीं कि यह कौन हैं?

चण्डूल०। (हँस कर) मेरी शान में कोई कैसी ही कड़ी बात कहे मगर मुझे क्रोध नहीं आता क्योंकि मैं जानता हूं सिवाय ईश्वर के कोई दूसरा मुझ से बड़ा नहीं है, सामने खड़ा हो कर जो बातें कर रहा है वह मेरे गुलाम के बराबर भी हैसियत नहीं रखता, मैं क्या जानूं कि (मायारानी की तरफ इशारा करके) यह कौन है, हां यदि मेरा हाल जानना चाहते हो तो पास आओ और कान में सुनो कि मैं क्या कहता हूं॥

बिहारी०। हम ऐसे बेवकूफ नहीं हैं कि तुम्हारे चकमें में आजायँ॥

चण्डूल०। क्या तू समझता है कि मैं उस समय वार करूंगा जब तू कान झुकाये हुए मेरे पास आकर खड़ा होगा?

बिहारी०। बेशक ऐसा ही है॥

चण्डूल०। नहीं नहीं यह काम हमारे ऐसे बहादुरों का नहीं है, खैर अगर डरता है तो किनारे चल मैं दूर ही से जो कुछ कहना है कह दूं जिसमें कोई दूसरा न सुने॥

बिहारी०। (कुछ सोच कर) ओफ! मैं तुझ ऐसे कमजोर से डरने वाला नहीं, कह क्या कहता है?

यह कह कर बिहारीसिंह उसके पास गया और झुक कर सुनने लगा कि वह क्या कहता है॥

न मालूम चण्डूल ने बिहारीसिंह के कान में क्या कहा,न मालूम उन शब्दों में कैसा असर था, न मालूम यह बात कैसे कैसे भेदों से भरी हुई थी,जिसने बिहारीसिंह को अपने आपेसे बाहर कर दिया। वह घबड़ा कर चण्डूल को देखने लगा, उसके चेहरे का रङ्ग जर्द हो गया और बदन में थर्थराहट पैदा हो गई॥

चण्डूल०। क्यों ! अगर अच्छी तरह न सुन सका है ते मैं जोर से पुकार के कहूं जिसमें और लोग भी सुन लें ॥

बिहारी० । (हाथ जोड़ कर) बस बस, क्षमा कीजिये, मैं आशा करता हूं अब आप दोहरा कर उन शब्दें को श्रीमुख से न निकालेंगे । मुझे यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि आप कौन हैं, चाहे जो हों ॥

माया० । (बिहारी से) उसने तुम्हारे कान में क्या कहा जिससे तुम घबड़ा गये ?

बिहारी०। (हाथ जोड़ कर) माफ कीजिये मैं उस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता ॥

माया० । (कड़ी आवाज में) क्या मैं सुनने योग्य नहीं हूं ?

बिहारी०। कह जो चुका कि मैं उन शब्दें को अपने मुंह से नहीं निकाल सकता ॥

माया०। (आंखें लाल करके) क्या तुझे अपनी ऐयारी पर घमण्ड होगया ? क्या तू अपने के भूल गया ? या इस बात के भूल गया कि मैं क्या कर सकती हूं और मुझमें कितनी ताकत है !!

बिहारी० । मैं आपके और अपने को खूब जानता हूं मगर उस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता, आप व्यर्थ खफा होती हैं इससे कोई काम न निकलेगा ॥

माया०। मालूम हो गया कि तू भी असली बिहारीसिंह नहीं है क्या हर्ज है समझ लूंगी (चण्डूल की तरफ देख के) क्या तू भी किसी दूसरे को वह बात नहीं कह सकता ?

चण्डूल०। जो कोई मेरे पास आवेगा उसके कान में मैं कुछ कहूंगा मगर इसका वादा नहीं कर सकता कि वही बातें कह कहूंगा या हर एक को नई नई बातों का मजा चखाऊंगा ॥

मायाः। क्या यह भी नहीं कह सकता कि तू कौन है और बाग में किस राह से आया ?

चण्डूल०। मेरा नाम चण्डूल है आने के विषय में तो केवल इतना ही कह देना काफी है कि मैं सर्वव्यापी हूं जहां चाहूं पहुंच सकता हूं, हां कुछ बात सुना चाहती हो तो मेरे पास आओ और सुनो ॥

हरनाम०। (मायारानी से) पहिले मुझे उसके पास जाने दीजिये (चण्डूल के पास जाकर) अब कहो क्या कहते हो ?

चण्डूल ने हरनामसिंह के कान में कोई बात कही, उस समय हरनामसिंह चण्डूल की तरफ कान झुकाये जमीन को देख रहा था, चण्डूल कान में कुछ कहके दो कदम पीछे हट गया मगर हरनामसिंह ज्यों का त्यों झुका हुआ खड़ाही रह गया यदि उस समय उसे कोई नया आदमी देखता तो यही समझता कि यह पत्थर का पुतला है। मायारानी को बड़ा आश्चर्य्य हुआ,कई सायत बीत जाने पर भी जब हरनामसिंह वहां से न हिला तो मायारानी ने पुकारा, "हरनाम !" उस समय वह चौंका और चारो तरफ देखने लगा,चण्डूल पर निगाह पड़ी तो मुंह फेर लिया और बिहारीसिंह के पास जा सिर पर हाथ रख बैठ गया ॥

माया०। हरनाम ! क्या तू भी बिहारी का साथी हो गया ! वह बात मुझसे न कहेगा जो अभी तू ने सुनी है ?

हरनाम०। मैं इसी वास्ते यहां आ बैठा कि आखिर तुम रञ्ज हो कर मेरा सिर काट लेने का हुक्म दोगी क्योंकि तुम्हारा मिजाज बड़ा क्रोधी है लाचार हूं मैं वह बात नहीं कह सकता ॥

माया०। मालूम होता है यह आदमी जादूगर है अस्तु जो हो मैं हुक्म देती हूं कि यह गिरफ्तार किया जाय ॥

चण्डूल०। गिरफ्तार होने के लिये तो मैं आया ही हूं कष्ट उठाने

की क्या आवश्यकता है ? लीजिये मैं स्वयम् आप के पास आता हूं हथकड़ी बेड़ी कहां है लाइये ॥

इतना कह कर चण्डूल तेजी के साथ मायारानी के पास गया और जब तक वह अपने को सम्हाले झुककर उसके कान में न मालूम क्या कह दिया कि उसकी अवस्था बिलकुलही बदल गई। बिहारीसिंह और हरनामसिंह तो बात सुनने के बाद इस लायक रहे कि किसी की बात सुनें और उसका जवाब दें मगर मायारानी इस लायक भी न रही, उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई, वह घूम कर जमीन पर गिर पड़ी और बेहोश होगई। बिहारीसिंह और हरनामसिंह को छोड़कर बाकी जितने आदमी उसके साथ आयेथे सभों में खलबली पड़ गई और सभों को इस बात का डर बैठ गया कि चण्डूल मेरे कान में भी कोई ऐसी बात न कह दे जिससे मायारानी की सी अवस्था हो जाय ॥

घण्टा भर बीत गया मायारानी होश में न आई, चण्डूल तेजसिंह के पास गया और उनके कान में भी कोई बात कही जिसके जवाब में तेजसिंह ने केवल इतना ही कहा, "मैं तैयार हूं ॥"

तेजसिंह का हाथ पकड़े हुए चण्डूल उसी कमरे में चला गया जिसमें से बाहर निकला था। अन्दर जाने बाद दर्वाजा बखूबी बन्द कर लिया गया। मायारानी के साथियों में से किसी की हिम्मत न पड़ी कि चण्डूल को या तेजसिंह को चण्डूल के साथ जाने से रोके। जिस समय चण्डूल यकायक कोठड़ी का दरवाजा खोल कर बाहर निकला था उस समय मालूम होता था कि उस कोठड़ी के अन्दर और भी कई आदमी हैं मगर इस समय तेजसिंह ने वहां सिवाय अपने और चण्डूल के और किसी को न पाया ॥

उधर मायारानी जब होश में आई तो बिहारीसिंह, हरनामसिंह

तथा अपने और साथियों को साथ लेकर खास महल में चली गई, उसके दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह अपने मालिक के वैसे ही तावेदार और खैरखाह बने रहे जैसे थे मगर चण्डूल की कही हुई बात वे दोनों अपने मुंह से नहीं निकाल सकते थे और जब चंडूल का ध्यान आता था तो बदन के रोंगटे खड़े हो जाते थे, ठीक यही अवस्था मायारानी की भी थी। मायारानी को यह भी निश्चय हो गया था कि चण्डूल नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह को छुड़ा ले गया॥
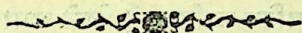
चौथा बयान।

शाम का वक्त है सूर्य्य भगवान अस्त हो चुके हैं तथापि पश्चिम तरफ आसमान पर कुछ कुछ लाली अभी तक दिखाई दे रही है, हवा ठण्ढी मगर मन्दगति से चल रही है गरमी तो नहीं मालूम होती लेकिन इस समय की हवा बदन में कपकपी भी नहीं पैदा कर सकती। हम इस समय आपको एक ऐसे मैदान की तरफ ध्यान देने के लिये कहते हैं जिसकी लम्बाई और चौड़ाई का अन्दाज करना कठिन है, जिधर निगाह दौड़ाइये सन्नाटा मालूम होता है कोई पेड़ भी ऐसा नहीं है जिसके पीछे या जिस पर चढ़ कर कोई आदमी अपने को छिपा सके, पूरब तरफ निगाह कुछ ठोकर खाती है और एक धुंधली चीज को देख कर गौर करने वाला कह सकता है कि उस तरफ कोई छोटी सी पहाडी या पुराने जमाने का कोई ऊँचा टीला होगा॥

उस मैदान में तीन औरतें घोड़ियों पर सवार धीरे धीरे उसी तरफ जा रही हैं जिधर कोई टीला या छोटी पहाड़ी की स्याही मालूम हो रही है, यद्यपि इन औरतों की पोशाक जनानी वजह की है

मगर फिर भी चुस्त और दक्षिणी ढङ्ग की है। तीनों के चेहरों पर नकाब पड़ी हुई है,बदन की सुडौली और कलाई तथा नाजुक नाजुक उंगलियों पर ध्यान देने से देखने वाले के दिल में यह बात जरूर पैदा होगी कि ये तीनों औरतें नाजुक, नौजवान और खूबसूरत हैं। इन औरतों के विषय में हम अपने पाठकों को ज्यादे देर तक खुटके में न डाल कर इसी समय इनका परिचय देदेना उत्तम समझते हैं। वह देखिये ऊँची और मुश्की घोड़ी पर जो सवार है वह मायारानी है, चोगर आंखों वाली कुमेद पचकल्यान घोड़ी पर जो पटरी जमाये है वह उसकी छोटी बहिन लाडिली है जिसे अभी तक हम रामभोली के नाम से लिखते चले आये हैं! सब्जी घोड़ी पर सवार चारो तरफ निगाह दौड़ा दौड़ा कर देखने वाली धनपति है। ये तीनों आपुस में धीरे धीरे बातें करती जा रही हैं, लीजिये तीनों ने अपने चेहरे पर से नकाब उलट दी अब हमें इन तीनों की बातों पर भी ध्यान देना उचित है॥

माया०। न मालूम वह चण्डूल तीसरे नम्बर के बाग में क्योंकर जा पहुंचा! इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं है कि जिस राह से हम लोग आते जाते हैं उस राह से वह नहीं गया॥

लाडिली०। तिलिस्म बनाने वालों ने वहां पहुंचने के लिये और भी कई रास्ते बनाये हैं शायद उन्हीं रास्तों में से कोई रास्ता उसे मालूम हो गया हो॥

धनपति०। मगर उन रास्तों का हाल किसी दूसरे को मालूम हो जाना बड़ी भयानक बात है॥

माया०। यह भी एक ताज्जुब की बात है कि उन रास्तों का हाल जब मुझको जो तिलिस्म की रानी कहलाती हूं नहीं मालूम तो किसी दूसरे को कैसे मालूम हुआ!!

लाडिली०। ठीक है। तिलिस्म की बहुत सी बातें ऐसी हैं जो तुम्हें मालूम हैं मगर नियमानुसार मुझसे भी नहीं कह सकती हो, हां उन रास्तों का हाल जीजाजी* को मालूम था, अफसोस ! उन्हें मरे पांच वर्ष हो गये अगर जीते होते तो.....

माया०। (कुछ घबरा कर और जल्दी से) तुम कैसे जानती हो कि उन रास्तों का हाल उन्हें मालूम था ?

लाडिली०। हँसी हँसी में उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था कि तीसरे दरजे के बाग में जाने के लिये पांच रास्ते हैं बल्कि मुझे अपने साथ वहां ले चल कर नया रास्ता दिखाने को तैयार थे मगर मैं तुम्हारे डर से उनके साथ न गई॥

माया०। आज तक तूने यह हाल मुझसे क्यों न कहा ?

लाडिली०। मेरी समझ में यह कोई जरूरी बात न थी जो तुम से कहती॥

लाडिली की बात सुन मायारानी चुप हो गई और बड़े गौर में पड़ गई। उसकी अवस्था और उसकी सूरत पर ध्यान देने से मालूम होता था कि लाडिली की बात से उसके दिल पर एक सख़्त सदमा पहुंचा है और वह थोड़ी देर के लिये अपने को बिलकुलही भूल गई है। मायारानी की ऐसी अवस्था क्यों हो गई और इस मामूली बात से उसके दिल पर क्यों चोट लगी ? इसका सबब उसकी सगी छोटी बहिन लाडिली भी न समझ सकी। कदाचित यह कहा जाय कि वह अपने पति को याद करके इस अवस्था में पड़ गई, सो भी नहीं हो सकता क्योंकि लाडिली खूब जानती थी कि मायारानी अपने

---

* जीजाजी से मतलब मायारानी के पति से है जो लाडिली के बहनोई थे॥

खूबसूरत, हँसमुख और नेक चालचलन वाले पति को कुछ भी नहीं चाहती थी। इस समय लाडिली के दिल पर एक तरह का खुटका पैदा हुआ और वह शक की निगाह से मायारानी की तरफ देखने लगी मगर मायारानी कुछ भी नहीं जानती थी कि उसकी छोटी बहिन उसे किस निगाह से देख रही है। लगभग दो सौ कदम चले जाने बाद वह चौंकी और लाडिली की तरफ जरा सा मुंह फेर कर बोली, "हां तो वह उन रास्तों का हाल जानता था !!"

लाडिली के दिल में और भी खुटका हुआ बल्कि इस बात का रञ्ज हुआ कि मायारानी ने अपने पति या लाडिली के प्यारे बहनोई की तरफ ऐसे शब्दों में इशारा किया जो किसी नीच या खिदमत-गार तथा नौकरों के लिये वर्ता जाता है। लाडिली का ध्यान धन-की तरफ भी गया जिसके चेहरे पर उदासी और रञ्ज की निशानी मामूली से कुछ ज्यादे पाई जाती थी और उसकी घोड़ी भी पांच सात कदम पीछे रह गई थी। मायारानी और धनपति की ऐसी अवस्था ज्यादे देर तक न रही उन दोनों ने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और फिर मामूली तौर पर बातचीत करने लगीं॥

धनपति०। अब टीला भी आ पहुंचा देखा चाहिये बाबाजी से मुलाकात होती है या नहीं॥

माया०। मुलाकात अवश्य होगी क्योंकि वे कहीं नहीं जाते मगर अब मेरा जी नहीं चाहता कि वहां तक जाऊँ या उनसे मिलूं॥

लाडिली०। सो क्यों ? तुम तो बड़े उत्साह से उनसे मिलने के लिये आई हो॥

माया०। ठीक है मगर अब जी में सोचती हूं तो यही जान पड़ता है कि बेचारे बाबाजी इन सब बातों का जवाब कुछ भी न दे सकेंगे॥

लाडि०। खैर जब इतनी दूर आ चुकी हो तो अब लौट चलना

भी उचित नहीं है॥

माया०। नहीं अब मैं वहां न जाऊँगी॥

इतना कह कर मायारानी ने घोड़ी फेरी,लाचार होकर लाडिली और धनपति को भी घूमना पड़ा मगर इस कार्रवाई से लाडिली के दिल का शक और भी ज्यादे हुआ और उसे निश्चय हो गया कि मेरी बात से मायारानी के दिल पर गहरी चोट बैठी है मगर इसका सबब कुछ मालूम नहीं होता॥

मायारानी ने जैसेही घोड़ी की बाग फेरी वैसेही उसकी निगाह तेजसिंह पर पड़ी जो तीर और कमान हाथ में लिये बहुत दूर से कदम दबाये इन तीनों के पीछे पीछे आ रहे थे। मायारानी तेजसिंह को अच्छी तरह जानती थी, यद्यपि इस समय कुछ अन्धेरा होगया था परन्तु मायारानी की तेज निगाह ने तेजसिंह को तुरत पहिचान लिया और इसके साथ ही तलवार खैंच कर तेजसिंह पर झपटी॥

मायारानी को नङ्गी तलवार लिये झपटते देख तेजसिंह ने ललकार के कहा, "खबरदार! आगे न बढ़ना नहीं तो एक ही तीर में काम तमाम कर दूंगा।" तेजसिंह के ललकारने से मायारानी रुक गई मगर धनपति से न रहा गया वह तलवार खैंच कर यह कहती हुई आगे बढ़ी, "मैं तेरे तीर से डरने वाली नहीं॥"

तेज०। मालूम होता है तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है,इसे खूब समझ लीजियो कि तेजसिंह के हाथ से छूटा हुआ तीर खाली नहीं जायगा॥

धनपति०। मालूम होता है कि तू केवल एकही तीर से हम तीनों को डरा कर अपना काम निकाला चाहता है,अफसोस! इस समय मेरे पास तीर कमान नहीं है यदि होता तो तुझे जान पड़ता कि तीर चलाना किसे कहते हैं॥

तेज०। (हँस कर) न मालूम तूने औरत होने पर भी अपने को क्या समझ रक्खा है! खैर अब मैं एक कमसिन औरत पर तीर न चलाऊँगा॥

इतना कह कर तेजसिंह ने तीर तरकश में रख लिया और कमान बगल में लटकाने बाद ऐयारी के बटुए में से एक छोटा सा लोहे का गोला निकाल कर सामने खड़ा होगया और धनपति को वह गोला दिखा कर बोला, "तुम लोगों के लिये यही बहुत है मगर मैं फिर भी कहे देता हूं कि मुझ पर तलवार चला कर भलाई की आशा मत रखियो॥"

धन०। (मायारानी की तरफ इशारा करके) तू जानता नहीं कि यह कौन है?

तेज०। मैं तुम तीनों को खूब जानता हूं और यह भी जानता हूं कि मायारानी सैंतालीस नम्बर की कोठड़ी को पवित्र करके बेवा हो गई है और इस बात को पांच वर्ष का ज़माना हो गया॥

इतना कह कर मुसकुराते हुए तेजसिंह ने एक भेद की निगाह मायारानी पर डाली और देखा कि मायारानी का चेहरा पीला पड़ गया और शर्म से उसकी आंखें नीचे की तरफ झुकने लगीं मगर यह अवस्था उसकी बहुत देर तक न रही तेजसिंह के मुंह से बात निकलने बाद जैसे ही लाडिली की ताज्जुब भरी निगाह मायारानी पर पड़ी वैसे ही मायारानी ने अपने को सम्हाल कर धनपति की तरफ देखा॥

अब धनपति अपने को रोक न सकी, उसने घोड़ी बढ़ाकर तेज-सिंह पर तलवार का वार किया। तेजसिंह ने फुर्ती से खाली देकर अपने को बचा लिया और वही लोहे का गोला धनपति की घोड़ी के सर में इस जोर से मारा कि वह सम्हल न सकी और सर हिला

कर जमीन पर गिर पड़ी। लोहे का गोला छटक कर दूर जा गिरा और तेजसिंह ने लपक कर उसे उठा लिया॥

आशा थी कि घोड़ी के गिरने से धनपति को कुछ चोट लगेगी मगर वह घोड़ी पर से उछल कर दूर जा रही और बड़ी चालाकी से गिरते २ उसने अपने को बचा लिया। तेजसिंह फिर वही गोला ले कर सामने खड़ा हो गया॥

तेज०। (गोला दिखा कर) इस गोले की करामात देखी? अगर अबकी फिर वार करने का इरादा करेगी तो यह गोला तेरे घुटने में बैठेगा और तुझे लङ्गड़ी हो कर मायारानी का साथ देना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता कि तुम लोगों को इस समय जान से मारूं मगर हां जिस काम के लिये आया हूं उसे किये बिना लौट जाना भी मुनासिब नहीं समझता॥

माया०। अच्छा बताओ तुम हम लोगों के पीछे पीछे क्यों आये हो और क्या चाहते हो?

तेज०। (लाडिली की तरफ इशारा कर के) केवल इनसे एक बात कहना और कुछ नहीं॥

लाडिली०। कहो क्या कहते हो?

तेज०। मैं इस तरह नहीं कहा चाहता कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा सुने, इन दोनों से अलग होकर सुन लो फिर मैं चला जाऊंगा। डरो मत मैं दगाबाज नहीं हूं, यदि चाहूं तो ललकार कर तुम तीनों को जमलोक पहुंचा सकता हूं मगर नहीं तुमसे केवल एक बात कहने के लिये आया हूं जिसके सुनने का अधिकार सिवाय तुम्हारे और किसी को नहीं है॥

कुछ सोच कर लाडिली वहां से हट गई और दूर जाकर तेजसिंह की तरफ देखने लगी मानो वह तेजसिंह की बात सुनने के

लिये तैयार है। तेजसिंह लाडिली के पास गए और बटुए में से एक चीठी निकाल उसके हाथ में दे कर बोले—"इसे जल्द पढ़ लो देखो मायारानी को इसका हाल न मालूम हो॥"

लाडिली ने बड़े गौर से वह चीठी पढ़ी और इसके बाद टुकड़े टुकड़े करके जमीन पर फेंक दी॥

तेज०। इसका जवाब?

लाडिली०। केवल इतना ही कह देना कि "बहुत अच्छा॥"

अब तेजसिंह को वहां ठहरने की कोई जरूरत न थी, उसने उत्तर का रास्ता लिया मगर घूम घूम कर देखता जाता था कि पीछे कोई आता तो नहीं। तेजसिंह के जाने बाद मायारानी ने लाडिली से पूछा कि वह चीठी किसकी थी और उसमें क्या लिखा हुआ था? लाडिली ने असल भेद तो छिपा रक्खा मगर कोई विचित्र बात बढ़ कर उस समय मायारानी की दिलजमई कर दी॥
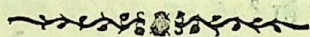
पांचवां बयान।

पाठकों को याद होगा कि भूतनाथ को नागर ने एक पेड़ के साथ बांध रक्खा है, यद्यपि भूतनाथ ने चालाकी और तिलिस्मी खञ्जर की मदद से नागर को बेहोश कर दिया मगर उसके चिल्लाने पर भी कोई मददगार न पहुंचा और नागर फिर से होश में आ कर उठ बैठी॥

नागर०। अब मुझे मालूम हुआ कि तेरे पास भी एक अदभुत वस्तु है!!

भूत०। जो अब तुम्हारा माल होगा॥

नागर०। नहीं, जिसके छूने से मैं बेहोश हो गई उसे अपने पास

क्योंकर रख सकती हूं मगर मालूम होता है कि कोई ऐसी चीज भी तेरे पास जरूर है जिसके सबब से इस खञ्जर का असर तुझ पर नहीं होता,खैर मैं यह तेरा तीसरा कसूर भी माफ करूंगी यदि यह खञ्जर मुझे दे दे और वह दूसरी चीज भी मेरे हवाले कर जिसके सबब से इस खञ्जर का असर तुझ पर नहीं होता॥

भूत०। मगर मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तुमने मेरा कसूर माफ किया॥

नागर०। और मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तू ने वास्तव में वही चीज मुझे दी जिसके सबब खञ्जर की करामात से तू बचा हुआ है॥

भूतनाथ०। बेशक मैं वही चीज तुम्हें दूंगा तुम आजमाने के बाद मुझे छोड़ सकती हो॥

नागर०। ताज्जुब नहीं कि आजमाते आजमाते मैं फिर बेहोश हो जाऊं क्योंकि तू धोखा देने में मुझसे किसी तरह कम नहीं है॥

भूत०। इसका जवाब तुम खुद सोच सकती हो॥

नागर०। हां ठीक है यदि मैं थोड़ी देर के लिये बेहोश भी हो जाऊंगी तो तू मेरा कुछ नहीं कर सकता क्योंकि पेड़ के साथ बंधा हुआ है और तेरे हाथ पैर भी खुले नहीं हैं॥

भूत०। और मेरे चिल्लाने से भी यहां कोई मददगार न पहुंचेगा॥

नागर०। हां इसका प्रमाण भी........

कहते कहते नागर रुक गई क्योंकि पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज उसने सुनी और किसी के आने का उसे शक हुआ। नागर ने पीछे घूम कर देखा तो कमलिनी पर नजर पड़ी जो नागर के दिये हुए घोड़े पर सवार इसी तरफ आ रही थी। कमलिनी इस समय उसी सूरत में थी जिस सूरत में नागर के यहां गई थी, उसका पहि-

चानना मुश्किल था मगर भूतनाथ की ज़ुबानी उसे पता लग चुका था इस लिये उसने कमलिनी को तुरत पहिचान लिया और भूतनाथ को उसी तरह छोड़ फुर्ती से अपने घोड़े पर सवार हो गई। कमलिनी भी पास आ पहुंची और नागर की तरफ देख कर बोली :—

कमलिनी०। तुझे तो विश्वास हो गया होगा कि मैं मिर्जापूर चली गई॥

नागर०। बेशक तुमने मुझे धोखा दिया, खैर अब मेरे हाथ से बच कर कहां जा सकती हो ? यद्यपि तुम मायारानी की बहिन हो और इस सबब से मुझे अदब करना चाहिये मगर तुम्हारी बुराइयों पर ध्यान देकर मायारानी ने हुक्म दे रक्खा है कि जो कोई तुम्हारा सिर काट कर उसके पास लेजायगा वह मुंह मांगा इनाम पावेगा, अस्तु अब मैं तुम्हें किसी तरह छोड़ नहीं सकती हां अगर तुम खुशी से मायारानी के पास चली चलो तो अच्छी बात है॥

कम०। (मुस्कुरा कर) ठीक है, मालूम होता है कि तू अभी तक अपने को अपने मकान में मौजूद समझती है और चारो तरफ अपने नौकरों को देख रही है॥

नागर०। (कुछ शर्मा कर) मैं खूब जानती हूं कि इस मैदान में मैं अकेली हूं और तुम्हारे साथ भी कोई दूसरा नहीं है अगर तुम अपने को हर्बा चलाने और ताकत में मुझसे बढ़ के समझती हो तो यह तुम्हारी भूल है इसका फैसला हाथ मिलाने ही से हो सकता है (हाथ बढ़ा कर) आइये॥

कम०। (हँस कर) वाह! तू समझती है कि मुझे इस अँगूठी की खबर नहीं जो तेरे इस बढ़े हुए हाथ में देख रही हूं, अच्छा ले॥

"अच्छा ले।" कह कर कमलिनी ने दिखा दिया कि उसमें कितनी तेज़ी और फुर्ती है। घोड़ा आगे बढ़ाया और तिलिस्मी खञ्जर निकाल

कर इतनी तेजी के साथ नागर के हाथ पर रक्खा कि वह अपना हाथ हटा भी न सकी और खञ्जर की तासीर से बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। कमलिनी ने घोड़े से उतर कर भूतनाथ को कैद से छुट्टी दी और कहा, "वाह! तुम इतने बड़े चालाक होकर फिर भी इसके फन्दे में आ गये!!"

भूतनाथ०। मैं इसके फन्दे में न आता यदि इस अँगूठी का गुन जानता जो इसकी उँगली में चमक रही है वास्तव में अनमोल वस्तु है और कठिन समय पर काम दे सकती है॥

कम०। इस कम्बख़्त के पास यही तो एक चीज है जिसके सबब से मायारानी की आंखों में इसकी इज्जत है, इसके जहर से कोई बच ही नहीं सकता हां, यदि यह चाहे तो जहर उतार भी सकती है न मालूम यह अँगूठी और इसका जहर उतारने की तर्कीब मनोरमा ने कहां से पाई!!

भूत०। मायारानी से और इससे क्या सम्बन्ध है?

कम०। मनोरमा उसकी सखियों में से सबसे बड़ा दर्जा रखती है और वह इसे अपनी बहिन से बढ़ के मानती है, यह अँगूठी भी मनोरमा ही की है॥

भूतनाथ०। तो मायारानी ने यह अँगूठी क्यों न ले ली उसके बड़े काम की चीज थी॥

कम०। उसको भी मनोरमा ने ऐसीही अँगूठी बना दी है और जहर उतारने की दवा भी तैयार कर दी है मगर इसके बनाने की तर्कीब नहीं बताती॥

भूत०। खैर अब यह अँगूठी आप ले लीजिये॥

कमलि०। यद्यपि यह मेरे काम की चीज नहीं है बल्कि इसको अपने पास रखने में मैं पाप समझती हूं तथापि जब तक मायारानी से

खटपट चली जाती है तब तक यह अँगूठी अपने पास जरूर रक्खूंगी। (तिलिस्मी खञ्जर की तरफ इशारा करके) इसके सामने यह अगूठी कोई चीज नहीं है ॥

भूत० । बेशक बेशक, जिसके पास यह खञ्जर है उसे दुनिया में किसी तरह की परवाह नहीं और अपने दुश्मन से चाहे वह कैसा ही जबर्दस्त क्यों न हो कभी नहीं डर सकता, आपने मुझपर बड़ी कृपा की जो ऐसा खञ्जर थोड़े दिन के लिये मुझे दिया, अहा ! वह दिन कैसा अच्छा होगा जिन दिन यह खञ्जर हमेशे अपने पास रखने की आज्ञा आप मुझे देंगी ॥

कम० । (मुस्कुरा कर) खैर वह दिन आज ही समझ लो, मैं हमेशे के लिये यह खञ्जर तुम्हें देती हूं मगर नानक के लिये ऐसा करने की सिफारिश न करना ॥

भूतनाथ ने खुश होकर कमलिनी को सलाम किया । कमलिनी ने नागर की उंगली से जहरीली अँगूठी उतार ली और उसके बटुए में से खोज कर उस दवा की शीशी भी निकाल ली जो उस अँगूठी के भयानक जहर को बात की बात में दूर कर सकती थी, इसके बाद कमलिनी ने भूतनाथ से कहा, "नागर को हमारे अद्भुत मकान में ले जाकर तारा के सुपुर्द करो और फिर मुझसे आकर मिलो, मैं फिर वहां अर्थात् मनोरमा के मकान पर जाती हूं। हां अपने कागजात भी इसके बटुए में से निकाल लो और इसी समय उसे जला कर सदैव के लिये निश्चिन्त हो जाओ ॥"

छठवां बयान।

मायारानी का डेरा अभी तक खास बाग (तिलिस्मी बाग) में है। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, चारो तरफ सन्नाटा छा गया है, पहरे वालों के सिवाय सभों को निद्रादेवी ने बेहोश करके डाल रक्खा है मगर उस बाग में दो औरतों की आंखों में नींद का नाम निशान नहीं है। एक तो मायारानी की छोटी बहिन लाडिली अपने सोने वाले कमरे में मसहरी के ऊपर पड़ी २ कुछ सोच रही है और थोड़ी थोड़ी देर पर उठकर बाहर निकलती और सन्नाटे की तरफ ध्यान देकर लौट जाती है, मालूम होता है कि वह मकान या बाग के बाहर जाकर किसी से मिलने का मौका ढूंढ़ रही है। दूसरी मायारानी निद्रा न आने के कारण अपने कमरे में टहल रही है। उसे तरह तरह के खयालों ने सता रक्खा है, कभी कभी उसका सर हिल जाता जो उसके दिल की परेशानी को पूरी तरह से छिपे रहने नहीं देता, उसके होंठ भी कभी कभी अलग होकर दिल का दर्वाजा खोल देते हैं जिससे दिल के अन्दर कैद रहने वाले कई भेद शब्दरूप होकर धीरे से बाहर निकल पड़ते हैं॥

जब चारो तरफ अच्छी तरह सन्नाटा हो गया तो लाडिली ने काले कपड़े पहिरे और ऐयारी का बटुआ कमर से लगाने बाद कमरे के बाहर निकल कर इधर उधर टहलना शुरू किया, वह उस कमरे के पास आई जिसके अन्दर मायारानी तरद्दुद और घबराहट से निद्रा न आने के कारण टहल रही थी। लाडिली छिपकर देखने लगी कि मायारानी क्या करती है, थोड़ी देर के बाद मायारानी के मुंह से निकले हुए कई शब्द लाडिली ने सुने और वे शब्द ये थे-"वह उस रास्ते को जानता है! वह भेद जिसे लाडिली नहीं जानती... आह!

धनिपत की मुहब्बत ने........"

इन शब्दों को सुन कर लाडिली घबड़ा गई और बेचैनी से अपने कमरे में लौट आने के लिये तैयार हुई मगर उसके दिल ने उसे वहां से टलने न दिया, इच्छा हुई की मायारानी के मुंह से और भी कोई शब्द निकले तो सुनूं परन्तु इसके बाद मायारानी कुछ ज्यादे वेचैन मालूम हुई और वह अपनी मसहरी पर जा कर लेट रही। आधी घड़ी से कुछ ज्यादे न बीती थी कि मायारानी की स्वांस ने लाडिली को उसके सो जाने की खबर दी और लाडिली वहां से लौट कर बाग में टहलने लगी। घूमती फिरती और अपने को पेड़ों की आड़ में बचाती हुई लाडिली बाग के पिछले कोने में पहुंची जहां एक छोटा सा बुर्ज था मगर मजबूत बना हुआ था, अन्दर जाने के लिये छोटा सा लोहे का दरवाजा था जिसे उसने धीरे से खोला और अन्दर जाने बाद फिर बन्द कर लिया। भीतर बिलकुल अन्धेरा था बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और कोठड़ी की हालत अच्छी तरह देखने लगी। वह बुर्ज वाली कोठड़ी वर्षों से योंही बन्द थी और इस सबब से उसके अन्दर मकड़ों ने अच्छी तरह अपना घर बना लिया था मगर लाडिली ने उस कोठड़ी की गन्दी हालत पर कुछ ध्यान न दिया। उस कोठड़ी की जमीन चौखूटे पत्थरों से बनी हुई थी और छत में छोटे छोटे दो तीन सूराख थे जिसमें से आसमान में जड़े हुए तारे दिखाई दे रहे थे। पहिले तो लाडिली इस बिचार में पड़ी कि बहुत दिनों से बन्द रहने के कारण इस कोठड़ी की हवा खराब हो कर जहरीली हो गई होगी शायद किसी तरह का नुकसान पहुंचे मगर छत के सूराखों को देख निश्चिन्त हो गई और मोमबत्ती एक किनारे जमा कर जमीन पर बैठ गई। आधी घड़ी तक वह सोच विचार में पड़ी रही इसके बाद हलकी

आवाज के साथ कोने की तरफ जमीन का एक चौखूटा पत्थर किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर अलग हो गया और नीचे से अपनी असली सूरत में कमलिनी निकल कर लाडिली के सामने खड़ी हो गई। कमलिनी को देखते ही लाडिली उठ खड़ी हुई और बड़ी मुहब्बत से उसके साथ लिपट कर रोने लगी। कमलिनी की आंखें भी आंसू की बूंदें गिराने लगीं, कुछ देर के बाद दोनों अलग हुईं और जमीन पर बैठ कर बातचीत करने लगीं॥

लाडि०। मेरी प्यारी बहिन ! इस समय मेरी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता। मुझे तो इस बात का बड़ा ही रञ्ज था कि तुमने मुझे अपने दिल से भूला दिया जिसकी आशा कदापि न थी मगर आज शाम को तुम्हारे हाथ की लिखी हुई उस चीठी ने मुझमें जान डाल दी जो तेजसिंह के हाथ मुझ तक पहुंचाई गई थी॥

कम०। नहीं नहीं, अभी तक मैं तुझे उतना ही प्यार करती हूं जितना यहां रहने पर करती थी परन्तु इस समय यह आशा कम थी कि मेरे लिखे अनुसार यहां आ कर तू मुझ से मिलेगी क्योंकि बड़ी बहिन मायारानी मेरी जान की ग्राहक हो रही है और तू उस के कब्जे में है॥

लाडिली०। प्यारी बहिन ! चाहे मायारानी का दिल तुम्हारी दुश्मनी से भरा हुआ क्यों न हो मगर मेरा दिल तुम्हारी मुहब्बत से किसी तरह खाली नहीं हो सकता। तुम्हारी चीठी पातेही मैं बेचैन हो गई और हजारों आफतों की तरफ ध्यान न दे कर बेखटके यहां चली आई, क्या......

कम०। हां हां,मुझे विश्वास है और मैं खूब जानती हूं कि अगर तेरे दिल में मेरी मुहब्बत न होती तो तू मेरे लिखने पर यकायक यहां न आती॥

लाडिली०। मुझे इस बात की शिकायत करने का मौका आज मिला कि तुमने इस घर को तिलांजुली देती समय अपने इरादे से मुझे बेखबर रक्खा॥

कम०। तो क्या मेरा इरादा जानने पर तू मेरा साथ देती?

लाडिली०। (जोर देकर) जरूर साथ देती। हाय यहां रह कर जैसी तकलीफ़ से मैं दिन काट रही हूं वह मेरा ही जी जानता है। ऐसे ऐसे भयानक काम मुझ से लिये जाते हैं जिसे मैं मुख़्तसर में कह नहीं सकती, लाचार होकर और झखमार कर सब कुछ करना पड़ता है क्योंकि इस बात को मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मायारानी के गुस्से में पड़ कर मैं अपनी जान भारतवर्ष के किसी घने जङ्गल में छिप कर भी नहीं बचा सकती॥

कम०। इसका यही सबब है कि तू तिलिस्मी हाल से बिलकुल बेखबर और भोली है बल्कि वास्तव में रामभोली है॥

लाडिली०। (चौंक कर) क्या तुम जानती हो कि मैं रामभोली बनने पर लाचार की गई थी?

कम०। हां मुझे अच्छी तरह मालूम है, अभी तक नानक मेरे साथ रह कर कर मेरा काम कर रहा है॥

लाडिली०। हाय! जब वह तुम्हारे साथ है तो जरूर एक दिन सामना होगा उस समय शर्म से मेरी आंख ऊंची न होगी, उस बेचारे के साथ मैंने बड़ी बुराई की॥

कम०। मैं खूब जानती हूं कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं, खैर इन बातों को जाने दे। मुझे तेरी मुहब्बत यहां तक खैंच लाई है, मैं इस समय यही पूछने आई हूं कि अब तेरा क्या इरादा है क्योंकि इस तिलिस्म की उम्र अब तमाम हो गई और मायारानी अपने बुरे कर्मों का फल भोगा ही चाहती है॥

लाडिली०। (हाथ जोड़ कर) मैं यही चाहती हूं कि तुम मुझे अपने साथ रक्खो जिसमें मायारानी का मुंह देखना नसीब न हो। मैं भी जानती हूं कि यह तिलिस्म अब टूटा ही चाहता है क्योंकि इधर थोड़े दिनों से बड़ी बड़ी अद्भुत बातें देखने सुनने में आती हैं जिससे खुद मायारानी की अक्ल चक्कर में है मगर शक है तो इतना ही कि तिलिस्म तोड़ने वाले कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस समय मायारानी के कैदी हो रहे हैं और कल उन दोनों का सिर जरूर काटा जायगा॥

कम०। यह हाल मुझे भी मालूम है मगर सवेरा होने के पहिले ही मैं उन दोनों को छुड़ा कर ले जाऊँगी॥

लाडिली०। यदि ऐसा हो तो क्या बात है वे दोनों कैसे नेक और खूबसूरत हैं! मैंने जिस समय आनन्दसिंह को देखा......

इतना कह कर लाडिली चुप हो रही,उसकी आंखें नीची होगईं और उसके गालों पर शर्म की सुर्खी दौड़ गई,कमलिनी समझ गई कि यह आनन्दसिंह को चाहती है॥

कमलिनी०। मगर उन दोनों को छुड़ाने के लिये कुछ तुझसे भी मदद चाहती हूं॥

लाडि०। तुम्हारी आज्ञा मानने के लिये मैं हर तरह से तैयार हूं॥

कमलिनी०। उस कैदखाने की ताली मुझे ला दे जिसमें दोनों कुमार कैद हैं॥

लाडिली०। मैं उद्योग करती हूं मगर वह तो हरदम मायारानी के कमर में रहती है॥

कम०। उसके लेने की सहज तर्कीब बताती हूं॥

लाडिली०। क्या?

कम०। (कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल कर और दिखा कर)

यह तिलिस्म की सौगात है,हाथ में लेकर जब इसका कब्जा दबाया जायगा तो बिजली की सी चमक पैदा होगी जिसके सामने किसी की आंख खुली नहीं रह सकती, इसके अतिरिक्त इसमें और भी दो गुण हैं एक तो यह कि जिसके बदन से यह लगा दिया जाय उस के बदन में बिजली दौड़ जाती है और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ता है दूसरे यह कि यह हर एक चीज काट डालने की ताकत रखता है ॥

कमलिनी ने खञ्जर का कब्जा दबाया,उसमें से ऐसी चमक पैदा हुई कि लाडिली ने दोनों हाथों से आंखें बन्द कर लीं और कहा—"बस बस इस चमक को दूर करो तो मैं आंख खोलूं ॥"

कम०। (कब्जा ढीला करके) लो चमक बन्द होगई आंख खोलो॥

लाडिली०। (आंख खोल कर) मेरे हाथ में दो तो मैं भी कब्जा दबा कर देखूं, मगर नहीं तुम तो कह चुकी हो कि यह जिसके बदन से छुलाया जायगा वह बेहोश हो जायगा तो मैं इसे कैसे ले सकूंगी और तुम पर इसका असर क्यों नहीं होता ?

हम ऊपर लिख आये हैं कि कमलिनी के कमर में दो तिलिस्मी खञ्जर थे और उसी के जोड़ की दो अँगूठियां भी उसकी उँगलियों में थीं। उसने एक अंगूठी लाडिली की उँगली में पहिरा कर उसका गुण अच्छी तरह समझा दिया और कह दिया कि जिसके हाथ में यह अँगूठी रहेगी वही इस खञ्जर को अपने पास रख सकेगा ॥

लाडिली०। जब ऐसी चीज तुम्हारे पास है तो वह ताली तुम स्वयम् उससे ले सकती हो ॥

कम०। हां मैं यह काम खुद कर सकती हूं मगर ताज्जुब नहीं कि मायारानी के कमरे तक जाते आते मुझे कोई देख ले और गुल करे तो मुश्किल होगी यद्यपि मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता मैं इस

खञ्जर की बदौलत सैकड़ों को मार कर निकल जा सकती हूं मगर जहां तक बिना खून खराबा किये काम निकल जाय उत्तम है ॥

लाडिली०। हां ठीक है तो अब बिलम्ब न करना चाहिये ॥

कम०। अच्छा मैं इसी जगह बैठी राह देखूंगी ॥

खञ्जर के जोड़ की अँगूठी हाथ में पहिरने बाद लाडिली ने तिलिस्मी खञ्जर ले लिया और बुर्ज का दरवाजा खोल वहां से रवाना हुई। कमलिनी को आधे घण्टे से ज्यादे राह न देखना पड़ा इसके भोतर ही ताली लिये हुए लाडिली आ पहुंची और अपनी बड़ी बहिन के सामने रख कर बोली—"इस ताली के लेने में कुछ भो कठिनाई न हुई,मुझे किसी ने भी न देखा,चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ था मायारानी बेखबर सो रही थी,ताली लेती समय वह जाग न उठे इस लिये यह तिलिस्मी खञ्जर एक दफे उसके बदन से लगा देना पड़ा, बस तुरत ही उसका बदन कांप उठा मगर वह आंख न खोल सकी,मुझे विश्वास होगया कि वह बेहोश होगई बस मैं ताली ले कर चली आई। अब यहां ठहरना उचित नहीं ॥"

कम०। हां, अब यहां से चलना और उन कैदियों को छुड़ाना चाहिये ॥

लाडिली०। मगर उन कैदियों को छुड़ाने के लिये तुमको इसी बाग की राह कैदखाने तक जाना होगा ॥

कमलिन०। नहीं,वहां जाने के लिये दूसरी राह भी है जिसे मैं जानती हूं ॥

लाडिली०। (ताज्जुब से कमलिनी का मुंह देख के) जीजाजी यहां के बहुत से रास्ते, सुरङ्गों और तहखानों को जानते थे, मालूम होता है तुमने उन्हीं से इसका हाल जाना होगा ॥

कम०। नहीं, यहां की बहुत सी बातें किसी दूसरे ही सबब से

मुझे मालूम हुईं जिसे सुन कर तू बहुत ही खुश होगी। हां यदि जीजाजी हम लोगों से जुदा न किये जाते तो यहां के अजायबातों के देखने का आनन्द मिलता। मायारानी को भी यहां के भेद अच्छी तरह नहीं मालूम॥

लाडिली०। जीजाजी हम लोगों से जुदा किये गये इसका मतलब मैं न समझी॥

कम०। क्या तू समझती है कि गोपालसिंह जी (मायारानी के पति) अपनी मौत से मरे॥

लाडिली०। (कुछ सोच कर) मुझे तो यही विश्वास है कि उन्हें जहर दिया गया, मैंने स्वयम् देखा कि उनका रङ्ग काला होगया था और चेहरा ऐसा बिगड़ गया था कि मैं पहिचान न सकी। हाय! हम दोनों बहिनों पर उनकी बड़ी ही कृपा रहती थी॥

कम०। उनकी कृपा किस पर नहीं रहती थी? (कुछ सोचकर) खैर आज मैं तुझे इस बाग के चौथे दर्जे में ले चल कर एक तमाशा दिखाऊँगी॥

लाडिली०। (ताज्जुब से) क्या चौथे दर्जे में तुम जा सकती हो?

कम०। हां, अब मैं यहां के बहुत से भेदों को जान गई हूं और सब जगह घूम फिर सकती हूं॥

लाडिली०। अहा! तब तो मैं जरूर चलूंगी जीजा जी अक्सर कहा करते थे कि इस बाग के चौथे दर्जे में अगर कोई जाय तो उसे मालूम हो कि दुनिया क्या चीज है और ईश्वर की सृष्टि में कैसी २ विचित्रता दिखाई दे सकती है॥

कम०। अच्छा अब चलकर पहिले कैदियों को छुड़ाना चाहिये॥

इतना कह कर कमलिनी उठी और मोमबत्ती हाथ में लिये हुए उस सुरङ्ग के मुंह पर गई जिसका मुंह चौखूटे पत्थर के हट जाने

से खुल गया था और जिसमें से कमलिनी निकली थी। नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां मौजूद थीं। दोनों बहिनें नीचे उतर गईं, आखिरी सीढ़ी पर पहुंचने के साथही वह चौखूटा पत्थर एक हलकी आवाज के साथ अपने ठिकाने पहुंच गया और उस सुरङ्ग का मुंह बन्द हो गया॥

॥ सातवां हिस्सा समाप्त ॥